लोई का ताना : कबीर के जीवन पर आधारित उपन्यास का विश्लेषण

HIN-675 : शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

अक्षदा अरविंद नाईक गावकर

अनुक्रमांक: 22P0140017

PR Number: 201604310

मार्गदर्शक

मनिषा गावडे

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

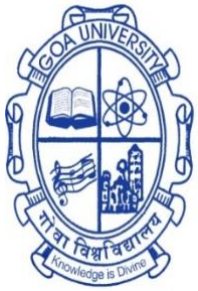

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: **Seal of the school**

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, 'लोई का ताना : कबीर के जीवन पर आधारित उपन्यास का विश्लेषण' is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms.Manisha Gaude and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Akshada Arvind Naik Gaonkar

22P0140017

Date: 16/04/2024

Place: Goa University, Taleigao

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report 'लोई का ताना : कबीर के जीवन पर आधारित उपन्यास का विश्लेषण' is a bonafide work carried out by Ms. Akshada Arvind Naik Gaonkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Manisha Gaude

Date: 16/04/2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

School Stamp

Date: 16/04/2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	**ii & iii**
	अनुक्रम	**iv**
	प्रस्तावना	**v**
1	**कबीर का जीवन** 1.1 जन्म और जन्मस्थान 1.2 धर्म और परिवार 1.3 शिक्षा और गुरु 1.4 मृत्यु संदर्भ सूची	**1 to 14**
2	**उपन्यास : शाब्दिक अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार** 2.1 उपन्यास का शाब्दिक अर्थ 2.2 उपन्यास की परिभाषा 2.3 उपन्यास के तत्व 2.3.1 कथानक 2.3.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण 2.3.3 कथोपकथन 2.3.4 देशकाल वातावरण 2.3.5 भाषा-शैली 2.3.6 उद्देश्य 2.4 उपन्यास के प्रकार	**15 to 35**

	2.4.1 जीवनीपरक उपन्यास 2.4.2 घटना प्रधान उपन्यास 2.4.3 चरित्र चित्रण प्रधान उपन्यास 2.4.4 ऐतिहासिक उपन्यास 2.4.5 सामाजिक उपन्यास संदर्भ सूची	
3	**'लोई का ताना' उपन्यास का तात्विक विश्लेषण** 3.1 कथानक 3.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण 3.2.1 मुख्य पात्र 3.2.1.1 कबीर 3.2.1.2 लोई 3.2.1.3 नीमा 3.2.2 गौण पात्र 3.2.2.1 कमाल 3.2.2.2 रामानंद 3.2.2.3 सिकंदर लोदी 3.2.2.4 देवीलाल 3.2.2.5 विक्रम 3.3 कथोपकथन 3.4 देशकाल वातावरण 3.5 भाषा-शैली 3.6 उद्देश्य	**36 to 59**

	संदर्भ सूची	
4	**'लोई' का चित्रण** 4.1 लोई का जीवन 4.2 लोई-कबीर का प्रेम 4.3 आदर्श पत्नी 4.4 स्त्री निंदा पर लोई के सवाल 4.5 लोई के संदर्भ में विद्वानों के मत संदर्भ सूची	**60 to 73**
5	**उपसंहार**	**74 to 77**
	संदर्भ सूची	**78 to 81**

प्रस्तावना

'लोई का ताना' उपन्यास रांगेय राघव जी का जीवनीपरक उपन्यास है, जो सन् 1954 ई. में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने कबीर के महत्व को दर्शाया है। कबीर भारतीय साहित्य और भक्तिसाधना के महान संत और कवि थे। कबीर के दोहे और भजन आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक न्याय, एकता, मानवता और सद्गुणों की महत्वपूर्ण बातें सिखाते हैं। उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में वर्तमान असमानता, जातिवाद और धार्मिक अंधविश्वास के खिलाफ आवाज़ उठाई। कबीर के जीवन पर आधारित 'लोई का ताना' उपन्यास में कबीर के जीवन पर प्रकाश डाला है। लेखक ने कबीर के सामान्य जीवन को केंद्र बनाया है और उनके जीवन से जुडे लोगों एवं घटनाओं का वर्णन किया है।

प्रथम अध्याय में कबीर के जीवन पर प्रकाश डाला है। यह जीवनीपरक उपन्यास है इसलिए कबीर के जीवन को जानना आवश्यक है। इसमें उनके युग और परिस्थितियाँ, जीवन परिचय एवं उनका व्यक्तित्व और उनके कृतित्त्व का विवरण दिया गया है। कबीर के जीवन का सटीक विवरण प्राप्त करना वास्तव में कठिन है, क्योंकि उनके जन्म, जीवन, और कार्यकाल से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों में विविधता है। इसके लिए

इतिहासकार, साहित्यिक विद्वान, और कबीरपंथी अनुयायियों के बीच मतभेद हैं। इसे समझने के लिए हमें उपलब्ध स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है, जो कई संदर्भों से जानकारी प्रदान करते हैं। कबीर के जीवन चरित्र का विश्लेषण करने का प्रयास करते समय बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि कुछ सामान्य तथ्य हमें उनके समय की जनश्रुतियों और स्रोतों से प्राप्त होते हैं। द्वितीय अध्याय में उपन्यास का अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें अलग-अलग विद्वानों के मत शामिल किए गए हैं। उपन्यास के विषय में जो भी महत्वपूर्ण बाते हैं, उस पर बात की है ताकि मूल उपन्यास पर लिखने से पूर्व उपन्यास क्या है यह जान सकूं। उपन्यास एक महत्वपूर्ण साहित्यिक रचना विधा है जो हमें कल्पना की दुनिया में ले जाती है। इसमें मनोरंजन के साथ-साथ विचारों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। उपन्यास के माध्यम से हम अलग-अलग चरित्रों के साथ जुड़ सकते हैं और उनकी भावनाओं को समझ सकते हैं। यह रचना विधा हमें नई दृष्टि प्रदान करती है और हमारी समझ में गहराई लाती है। उपन्यास की विशेषता यह है कि यह भावनाओं को शब्दों के माध्यम से प्रकट करता है और पाठक को विभिन्न दृश्यों के माध्यम से उन भावनाओं को अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। तृतीय अध्याय में 'लोई का ताना' उपन्यास को कथानक, पात्र, संवाद, कथोपकथन, देशकाल एवं वातावरण और उद्देश्य आदि तत्वों के आधार पर विश्लेषित

किया है। जिससे उपन्यास को अच्छे से जान सकते है। उपन्यास में काफ़ी सारे दोहों का उल्लेख किया है, इसलिए दोहो का अर्थ सहित वर्णन किया है। 'लोई का ताना' उपन्यास कबीर के जीवन के अन्यतम पहलुओं को उजागर करने वाली एक महत्वपूर्ण कृति है। इस उपन्यास में, लेखक ने कबीर के साधारण जीवन को विस्तृत रूप से चित्रित किया है और उनके अद्भुत विचारों को प्रस्तुत किया है। कथानक को विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो अन्यतम कबीर के पुत्र कमाल और उनकी पत्नी लोई के बीच के संवाद को भी शामिल करते हैं। यह उपन्यास हमें कबीर के विचार और उनकी विचारधारा को समझने में मदद करता है, जो समाज में सामाजिक और मानवीय बदलाव लाने के लिए प्रेरित करता है। प्रस्तुत कृति में महान कवि कबीर के जीवन पर ध्यान केंद्रित किया गया है और उनके विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया गया है। कबीर के साधारण जीवन को इस उपन्यास में महत्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठक उनके विचारों को समझ सकें। इसके अलावा, लेखक ने कबीर और उनकी पत्नी लोई के संवाद को भी महत्वपूर्ण रूप से उजागर किया है, जो हमें समाज में स्त्री की भूमिका के बारे में सोचने पर प्रेरित करता है। चौथे अध्याय में लाई पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस में स्त्री निंदा, माया, लोई-कबीर का प्रेम आदि विषयों पर बात की है। 'लोई' को गहराई से जानना इस शोध का मुख्य उदेश्य है। कबीर के विषय पर बहुत साहित्य लिखा जा रहा

है लेकिन लोई एक ऐसा पात्र है जिस पर ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है और इसके संबंध में विद्वानों के भी कही मतभेद है, उन्हीं को समझने का प्रयास किया है। इस शोध कार्य में नया ढूंढने की कोशिश की है क्योंकि कबीर को हर कोई जानता है लेकिन लोई जो कबीर की पत्नी के नाम से जानी जाती है उस पर ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा विद्वानों की लोई के संदर्भ में क्या राय है वह लिखा है। प्रस्तुत शोध कार्य में रांगेय राघव के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया है। डॉ. रांगेय राघव ने स्त्री पात्रों को महत्वपूर्ण भूमिका दी है। उन्होंने कबीर की पत्नी लोई को उपन्यास के मुख्य पात्र के रुप में उभारा है और उन्हें आदर्श स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है। लोई की प्रेरणादायक कहानी और उनकी साहसिकता ने उपन्यास को एक अद्वितीय दिशा दी है। इस परिचय में लोई के महत्वपूर्ण स्थान और उनके पात्र के महत्व को समझेंगे। लोई के चरित्र की विशेषताओं के माध्यम से लेखक ने समाज के भेदभाव और सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ एक महिला की साहसिकता और समर्पण को प्रशंसित किया है। यह उपन्यास न केवल लोई के जीवन की कथा है, बल्कि एक समर्पित और प्रेरणादायक नारी की कहानी भी है, जो अपने प्रेम और समर्पण के माध्यम से अनेक संघर्षों का सामना करती है। उपसंहार में संपूर्ण शोध का निष्कर्ष एवं शोध का लक्ष्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मैंने प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा समाज एवं साहित्य को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। मैं अपनी शोध मार्गदर्शिका मनिषा गावडे, सहायक प्राध्यापक; हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय की सदैव आभारी रहूँगी। जिनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से यह कठिन कार्य संभव हो सका और अध्ययन को व्यापक दृष्टि मिली। मैं गोवा विश्वविद्यालय और कृष्णदास शामा गोवा स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, पणजी के ग्रंथ पालिका एवं उनके सहयोगियों का कृतज्ञता पूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मदद और सहयोग के वजह से ही यह शोध पूर्ण हो पाया है। हिंदी अध्ययन शाखा के सभी प्राध्यापकों के प्रती में कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी सहायता की है। में मेरे पिता श्री. अरविंद नाईक गांवकर और माता श्रीमती. अपुर्वा नाईक गांवकर के आशीर्वाद और निस्वार्थ सहायता से ही यह शोध कार्य संपन्न हो पाया है। जिन्होंने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाने में सहायता की हैं। उन समीक्षकों और लेखकों की भी मैं आभारी हूँ जिनकी कृतियों की सहायता मुझे प्राप्त हो पाई। मैं वरिष्ठ लेखक धर्मवीर भारती, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदी लेखकों की लेखनी को भी नमन करना चाहती हूँ जिनके विचार इस शोध प्रबंध में शामिल हैं।

अध्याय 1 : कबीर का जीवन

मध्यकालीन भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियाँ चिंताजनक थीं। मुस्लिम शासकों की अनैतिक शासन प्रणाली से जनता परेशान थी। समाज में जातिवाद और असमानता बढ़ रही थी। हिंदू धर्म में कर्मकांडों और पाखंडों की बढ़ती संख्या के कारण जनमानस का धर्म पर से विश्वास उठने लगा था। ऐसे समय में मध्यकालीन शीर्षस्थ कवि कबीर का जन्म हुआ।

1.1 जन्म और जन्मस्थान

कबीरदास के जन्म के विषय में भिन्न-भिन्न मत पाये जाते हैं। 'कबीर कसौटी' नामक पुस्तक में कबीर जी के जन्म के संबंध में एक प्रसिद्ध दोहा है:

"चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ ठए।

जेठ सुदी बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रगट भए॥"[1]

जिसका अर्थ यह पाया जाता है कि; "कबीर का जन्म जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा संवत 1455 को हुआ था जिसे वर्तमान समय में सन 1398 ई. के तौर पर समझा जा सकता है।"[2] आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी

प्रसाद द्विवेदी भी संवत् 1456 (सन् 1399) को कबीर का जन्म-संवत् स्वीकार करते हैं। कबीर के जन्मस्थान के संबंध में दो क्षेत्रों का उल्लेख मिलता हैं; मगहर और काशी। मगहर के पक्ष में यह कहा जाता है कि कबीर ने अपनी रचना में इसका उल्लेख किया है:

"पहिले दरसन मगहर पायो,

पुनि कासी बसे आई।"[3]

अर्थात् काशी में रहने से पहले उन्होंने मगहर देखा। कबीर का अधिकांश जीवन काशी में व्यतीत हुआ। वे काशी के जुलाहे के रूप में जाने जाते हैं। हालांकि, इसके बावजूद, कबीर के जन्मस्थान के संबंध में कोई प्रमाण नहीं है कि वे काशी में ही पैदा हुए थे। डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत, डॉ पीतांबर बडथ्वाल, डॉ सतनाम सिंह आदि कबीर का जन्म-स्थान मगहर को मानते हैं, किन्तु अधिकांश विद्वान कबीर का जन्म-स्थान काशी को ही स्वीकार करते हैं; जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ श्याम सुंदर दास, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, प्रभाकर माचवे ने उनका जन्म स्थान काशी माना है।

1.2 धर्म और परिवार

कबीर के धर्म और परिवार के संदर्भ में अलग-अलग राय हैं। उनके धर्म के बारे में कोई कहता है वे हिंदू हैं तो कोई कहता है वे मुसलमान। "कबीर ने अपने आपको कहीं 'कोरी' और कहीं 'जुलाहा' कहा है। जैसे;

- हरि को नाम अझै पद दाता, कहै कबीरा कोरी।
- मेरे राम की अभय पद नगरी, कहै कबीर जुलाहा।

वास्तव में कोरी और जुलाहे का पेशा एक ही होता है, कपड़ा बुनना। कोरी हिंदू होता है और जुलाहा मुसलमान। कबीर न हिंदू थे, न मुसलमान, बल्कि एक शुद्ध इंसान थे।"[4](डॉ.चन्द्रिकाप्रसाद; संत कबीर) विधान सिंह के शब्दों में; "कबीर दास के अनुसार, जीवन जीने का तरीका ही असली धर्म है, जिसे लोग जीते है ना कि वे जो लोग खुद बनाते हैं। उनके अनुसार कर्म ही पूजा है और जिम्मेदारी ही धर्म है। वे कहते थे कि अपना जीवन जीयो, जिम्मेदारी निभाओ और अपने जीवन को शाश्वत बनाने के लिये कड़ी मेहनत करो। कभी भी जीवन में सन्यासियों की तरह अपनी जिम्मेदारियों से दूर मत जाओ। उन्होंने पारिवारिक जीवन को सराहा है और महत्व दिया है, जो कि जीवन का असली अर्थ है। वेदों में यह भी उल्लिखित है कि घर छोड़ कर जीवन को जीना असली धर्म नहीं है। गृहस्थ के रुप में जीना भी एक महान और वास्तविक सन्यास है। जैसे, निर्गुण साधु जो एक पारिवारिक जीवन

जीते हैं, अपनी रोजी-रोटी के लिये कड़ी मेहनत करते है और साथ ही भगवान का भजन भी करते हैं। कबीर ने लोगों को विशुद्ध तथ्य दिया कि इंसानियत का क्या धर्म है, जो कि किसी को अपनाना चाहिये। उनके इस तरह के उपदेशों ने लोगों को उनके जीवन के रहस्य को समझने में मदद किया।"[5] अपने दोहों में कबीर खुद को ब्राह्मण नहीं बताते हैं बल्कि वह कई जगहों पर खुद को जुलाहा कहते नजर आते हैं; जैसे कि;

- "जाति जुलाहा नाम कबीरा, बनि बनि फिरौं उदासी।"[6]
- "तू ब्राह्मन, मैं काशी का जुलाहा।"[7]

प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल की पुस्तक 'अकथ कहानी प्रेम की: कबीर की कविता और उनका समय' में उन्होंने कबीर की जाति 'जुलाहा' को अनेक नए प्रमाणों से प्रमाणित किया है और बताया है कि कबीर जन्म से जुलाहा-मुसलमान थे। इस पुस्तक के तीसरे अध्याय 'कासी बसै जुलाहा एक' में अनेक पंक्तियाँ और प्रमाण है कि "कबीर जन्म से जुलाहा-मुसलमान थे। उनके घर और समाज में मुस्लिम रीति-रिवाज, त्यौहार आदि मनाए जाते थे। हालाँकि कबीर की व्यक्तिगत पसंद, मान्यता और रुचि इन सबसे भिन्न थी। कबीर के समकालीनों ने उन्हें जुलाहा ही कहा है।"[8](कमलेश वर्मा, जाति के प्रश्न पर कबीर) ऐसा कहा जाता है कि उनका जन्म हिंदू परिवार में हुआ और पालन-पोषण मुसलमान

परिवार में हुआ है। इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि उनके असली माता-पिता कौन थे लेकिन ऐसा माना जाता है कि उनका लालन-पालन एक गरीब मुस्लिम परिवार में हुआ था। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार, वे एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र थे, लेकिन समाज और लोक-लज्जा के भय से उन्हें लहरतारा नामक तालाब के किनारे छोड़ दिया था। नीरू और नीमा नाम के एक मुसलमान जुलाहे दंपति उधर से गुजर रहे थे। उन्हें वहाँ से एक नवजात शिशु की रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उस आवाज की दिशा में बढ़ते हुए इधर-उधर देखने लगे। तब उनकी नजर एक तालाब के किनारे पड़े एक नवजात शिशु पर पड़ी। दोनों उसके पास पहुँच गए। नीरू और नीमा की कोई संतान नहीं थी। वे उसे अपने घर ले आए और उसका पालन-पोषण करने लगे। हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन "कबीरदास का लालन-पालन जुलाहा परिवार में हुआ था, इसलिये उनके मत का महत्त्वपूर्ण अंश यदि इस जाति के परंपरागत विश्वासों से प्रभावित रहा हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यद्यपि 'जुलाहा' शब्द फारसी भाषा का है, तथापि इस जाति की उत्पत्ति के विषय में संस्कृत के पुराणों में कुछ न कुछ चर्चा मिलती ही है।"[9] कबीरदास के विवाहित जीवन पर कई विभिन्न कथाएं हैं, जैसे कि उनकी दो पत्नियाँ थी, एक का नाम था लोई और दूसरी रामजनिया। पहली पत्नी लोई की मृत्यु के बाद उन्होंने दूसरी शादी की थीं। जनश्रुति के अनुसार कबीर के

एक पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्र का नाम कमाल, पुत्री का नाम कमाली था।

1.3 शिक्षा और गुरु

कबीर की शिक्षा और गुरु परंपरा के बारे में कई अनुमान हैं। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने अपनी वाणी से स्वयं ही कहा है :

"मसि कागद छूयो नहीं, कलम गह्यो नहीं हाथ।"[10]

जिससे ज्ञात होता है कि उन्होंने अपनी रचनाओं को नहीं लिखा। इसके पश्चात भी उनकी वाणी से कहे गए अनमोल वचनों के संग्रह रूप का कई प्रमुख ग्रंथो में उल्लेख मिलता है। "वे कागज की लिखी बात पर कम तथा आँखों देखे स्वानुभूत सत्य पर अधिक विश्वास करते थे। भले ही कबीर ने औपचारिक शिक्षा प्राप्त न की हो, किन्तु सत्संग से उन्होंने बहुत कुछ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे बहुश्रुत थे। अपनी प्रतिभा एवं साधना के बल पर आध्यात्मिक अनुभूतियों को भी उन्होंने व्यक्त करने की असाधारण प्रतिभा दिखाई थी। कबीर की साखियों और पदों का संग्रह उनके शिष्य धर्मदास ने किया था।"[11](डॉ. एस.के शर्मा; हिंदी काव्य) ऐसा माना जाता है कि अपने बचपन में उन्होंने अपनी सारी धार्मिक शिक्षा रामानंद नामक गुरु से ली और एक दिन वो गुरु

रामानंद के अच्छे शिष्य के रूप में जाने गए। कबीर ने रामानंद और अपने जन्म के बारे में कहते हैं;

"हम कासी में प्रकट भये हैं, रामानंद चेताये।"[12]

"कबीरपंथी रामानंद को ही उनका गुरु मानते हैं। कुछ विद्वान शेख तकी को कबीर का गुरु मानते हैं, किंतु यह अप्रामाणिक है। उनके गुरु तो रामानंद ही थे।"[13](डॉ.चन्द्रिकाप्रसाद; संत कबीर)

1.4 मृत्यु

कबीर के मृत्यु वर्ष के बारे में अलग-अलग मत हैं। अनन्तदास का मत है कि कबीर 120 वर्ष की लंबी आयु तक जीवित रहे। बाबू डॉ. श्यामसुंदर दास मानते हैं कि कबीर का निधन 1517 में हुआ। डॉ. हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार उनका निंदन 1518 में हुआ। कबीर की मृत्यु के संबंध में जो प्रचलित काव्य पंक्तियाँ मिलती हैं, वे इस प्रकार हैं :

- "समन्त पन्द्रा सौ उनहत्तरा रहाई।
  सतगुर चले उठि हंसा ज्याई॥"[14]
- "संवत् पन्द्रह सौ पछहत्तरा किया मगहर को गवन।
  माघ शुदी एकादशी रलो पवन में पवन"॥[15]

'भक्तमाला की टीका' में दर्ज एक दोहा है;

"पन्द्रह सै उनचास में, मगहर कीन्हो गौन।

अगहन सुदी एकादसी मिलो पौन में पौन॥"[16]

इस दोहे के अनुसार; "कबीर संवत् 1549 में मगहर गए और आगे आने वाली एकादशी के मुताबिक लगभग 2 साल बाद संवत 1551 में उन की मृत्यु हुई। इस तिथि को भी कई विद्वान सही मानते हैं। इस तिथि के मुताबिक कबीर की आयु लगभग 96 वर्ष बनती है।"[17] इसी प्रकार कबीर की मृत्यु को लेकर कई तिथियां बताई गई हैं। कबीर दास के बारे में ऐसा माना जाता है कि उन्होंने अपने मरने की जगह खुद से चुनी थी, मगहर, जो लखनउ शहर से 240 किमी दूरी पर स्थित है। लोगों के दिमाग से अंधविश्वास को खत्म करने के लिये उन्होंने ये जगह चुनी थी। कहा जाता है कि कबीर दास के मृत्यु के बाद, हिन्दू और मुस्लिम लोगों ने उनके शरीर को पाने के लिए आपस मे लड़ रहे थे। दोनों समुदाय अपने धर्म के अनुसार उनका अंतिम संस्कार करना चाहते थे। हिन्दू लोग चाहते थे कि उनका शरीर जलाया जाए, जबकि मुस्लिम लोग उन्हें दफनाना चाहते थे। उस समय लोगों की धारणा थी जो भी काशी में मरता है वह सीधे स्वर्ग जाता है, इसीलिए मोक्ष पाने के लिए हिंदू अपने अंतिम समय में काशी जाते हैं। इस पर विधान सिंह का कथन है; "ऐसा माना जाता है कि कबीर दास के मृत्यु के बाद हिन्दू और मुस्लिमों ने उनके शरीर को पाने के लिए अपना-अपना दावा पेश

किया। दोनों धर्मों के लोग अपने रीति-रिवाज और परंपरा के अनुसार कबीर का अंतिम संस्कार करना चाहते थे। हिन्दुओं ने कहा कि वो हिन्दू थे इसलिए वे उनके शरीर को जलाना चाहते हैं जबकि मुस्लिमों ने कहा कि कबीर मुस्लिम थे इसलिए वो उनको दफनाना चाहते हैं। लेकिन जब उन लोगों ने कबीर के शरीर पर से चादर हटाई तो उन्होंने पाया कि कुछ फूल वहाँ पर पड़े हैं। उन्होंने फूलों को आपस में बाँट लिया और अपने-अपने रीति-रिवाजों से महान कबीर का अंतिम संस्कार संपन्न किया।"[18] लेकिन वैज्ञानिक रूप से यह स्वीकार करना कठिन है। विधान सिंह के शब्दों में; "मगहर में कबीर दास की समाधि और मजार दोनों है। समाधि से कुछ मीटर दूरी पर एक गुफा है, जो मृत्यु से पहले उनके ध्यान लगाने की जगह को इंगित करती है। उनके नाम से एक ट्रस्ट चल रहा है जिसका नाम है कबीर शोध संस्थान जो कबीर दास के कार्यों पर शोध को प्रचारित करने के लिये शोध संस्थान के रुप में है। वहाँ पर शिक्षण संस्थान भी है, जो कबीर दास के शिक्षण को भी समाहित किया हुआ है।"[19] कबीर के जन्म का समय और स्थान से जुड़े विद्वानों की निर्णय में कठिनाईयों के कारण अभी तक पूर्ण स्पष्टता नहीं है। उनके जीवन के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों में एकरूपता नहीं है। इसमें इतिहासकार, साहित्यिक विद्वान, और कबीरपंथी अनुयायियों के बीच मतभेद हैं। कबीर की रचनाओं में अंतःसाक्ष्य कम है, लेकिन एक सामान्य जीवन चरित्र की रूपरेखा तैयार करने का प्रयास, जिस में उपलब्ध स्रोतों

का सहारा लिया गया है, यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। कबीर के जीवन का सटीक विवरण प्राप्त करना कठिन है, लेकिन इसमें कुछ सामान्य तथ्य हैं जो उसके समय की जनश्रुतियों और स्रोतों से आए हैं। कबीर के जीवन-परिचय के विषय में पंडित परशुराम चतुर्वेदी का कथन है कि "सन्त कबीर साहब की कोई प्रामाणिक जीवनी अभी तक उपलब्ध नहीं है। न ऐसे ऐतिहासिक प्रसंग ही इतनी संख्या में मिलते हैं, जो उनके जीवन की घटनाओं को किसी सुव्यवस्थित रूप में लाते समय पर्याप्त सिद्ध हो सकें। उनके विषय में जो कुछ मिलता है, उसका अधिकांश पौराणिक गाथाओं से अधिक महत्त्व नहीं रखता और शेष भी निरे उल्लेख व प्रसंग के ही रूप में हैं। उनकी सारी प्रामाणिक रचनाओं का भी कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं, जिसके आधार पर किसी अनुमान की पुष्टि हो। उनके पदों साखियों में जो कुछ संकेत बिखरे हुए से दीख पड़ते हैं वे ही इस समय उनके परिचय के साधन बन सकते हैं।"

संदर्भ सूची

1. गड्गाविष्णु श्रीकृष्ण दास श्रीबाबूलैहनासिंह, “कबीरकसौटी”, लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, कल्याण-मुंबई. संवत 1982, शके 1847. कल्याण--मुंबई.
2. द्विवेदी हजारीप्रसाद, “हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास”, मूल संस्करण: 1952, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002
3. शर्मा रामकिशोर, “कबीर ग्रंथावली(सटीक)”, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद-1 द्वारा प्रकाशित, सातवां संस्करण: 2008
4. डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद शर्मा, “सरल एवं अनुपम पुस्तकमाला संत कबीर”, प्रकाशक परमेश्वरी प्रकाशन बी-109, प्रीत विहार दिल्ली-110092, संस्करण 2008, पृ. 11
5. सिंह विधान, “संत साहित्य : अतीत के गर्भ से (Sant Sahitya: From the Womb of the Past)”, प्रथम संस्करण: 2022, भाषा प्रकाशन नई दिल्ली 110002

6. बलदेव वंशी, “भारतीय संत परंपरा”, प्रकाशक : किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-110002, संस्करण 2012, पृ. 81

7. विजयेन्द्र स्नातक, “कबीर” राधाकृष्ण मूल्यांकन माला, पहला संस्करण : 1965, आठवीं आवृत्ति : 2008 प्रकाशक: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृ.12

8. कमलेश वर्मा, “जाति के प्रश्न पर कबीर”, प्रकाशक : द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन, 2017, पृ. 41

9. पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज: “कबीर (कबीर, उनका साहित्य और उनके दार्शनिक विचारों की आलोचना)”, प्रकाशक हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण मार्च, 1942, पृ. 29

10. डॉ. भगवतीशरण मिश्र, “हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार”, प्रथम संस्करण: 2010, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006 pg no. 215

11. डॉ. एस.के. शर्मा, “NEP हिन्दी आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता(Hindi)”,(MJC-2) Rajeev Bansal's S3PD राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 के अन्तर्गत न्यूनतम

समान पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी काव्य, प्रकाशक: एसबीपीडी प्रकाशन, 2022,

12. शर्मा रामकिशोर, “कबीर ग्रंथावली(सटीक)”, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद-1 द्वारा प्रकाशित, सातवां संस्करण : 2008, वही, पृ. 02
13. शर्मा, डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद शर्मा. “सरल एवं अनुपम पुस्तकमाला संत कबीर”, प्रकाशक परमेश्वरी प्रकाशन बी-109, प्रीत विहार दिल्ली-110092, संस्करण 2008,
14. डॉ. धर्मवीर, “कबीर के आलोचक”, वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित, संस्करण: 1997, पृ. 12
15. वही, पृ.12
16. आनन्द, नीरज. “कबीर चिन्तन”, वाणी : सरल भाव जीवन : अनछुए पहलू, प्रकाशित: 24 जुलाई 2017, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
17. आनन्द, नीरज. “कबीर चिन्तन”, वाणी : सरल भाव जीवन : अनछुए पहलू, प्रकाशित: 24 जुलाई 2017, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 94

18. विधान, सिंह. “संत साहित्य : अतीत के गर्भ से (Sant Sahitya: From the Womb of the Past)”, प्रथम संस्करण : 2022, भाषा प्रकाशन नई दिल्ली 110002, पृ. 164

19. वही; पृ. 166

अध्याय : 2 उपन्यास : शाब्दिक अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार

उपन्यास महत्वपूर्ण कलाओ में से एक हैं। जिस में रचना को पढ़ते समय हम काल्पनिक दृष्टि से महसूस करते हैं। इस में मनोरंजन के साथ-साथ विचारों का खास महत्व है। इसके माध्यम से हम अलग-अलग चरित्रों के साथ जुड़ सकते हैं और उनकी भावनाओं को समझ सकते हैं। यह मनोरंजन के साथ-साथ विचारों को भी उत्पन्न करता है, जिससे हमारी समझ में गहराई आती है। उपन्यास की खासियत यह है कि यह भावनाओं को शब्दों के माध्यम से प्रकट करता है और पाठक को एक नई दृष्टि प्रदान करता है। इसके माध्यम से हमारी सोचने की क्षमता बढ़ती है और हम अपने जीवन में नई शिक्षाएं अनुभव करते हैं। प्रत्येक कला रूप की अपनी विशेषताएँ एवं मर्यादाएं होती हैं।

2.1. उपन्यास का शाब्दिक अर्थ

हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं में से एक उपन्यास है। यह दो शब्द उप+न्यास से मिलकर बना है। 'उप' उपसर्ग का अर्थ होता है; सामने या समीप और 'न्यास' शब्द का अर्थ होता है; धरोहर और रखना। इस आधार पर उपन्यास शब्द का अर्थ इस प्रकार किया है कि एक लेखक अपने जीवन और समाज के आसपास जो कुछ देखता-सुनता और अनुभव

करता है उसे अपने भाव-विचार से कल्पना के द्वारा प्रस्तुत करता है। उपन्यास में वर्णित घटना को लेखक समाज से ही ग्रहण करता है और कल्पना के द्वारा सुंदर रुप से हमारे सामने प्रस्तुत करता है इसलिए वह हमें अच्छा लगता है। यानी वह साहित्यिक रचना जिसे पढ़कर लगे कि उसमें वर्णित घटना हमारे निकट की नहीं बल्कि हमारी ही है, उसे उपन्यास कहते हैं। अग्रेजी में जिसे Novel(नॉवेल) कहते है, बांग्ला में उसे 'उपन्यास' नाम से अभिहित किया जाता है और बांग्ला के समान ही हिंदी में यह विधा उपन्यास नाम से प्रचलित है। बांग्ला में 'उपन्यास' शब्द संस्कृत काव्यशास्त्र से लिया गया, जिसका शाब्दिक अर्थ है; समीप रखना। उपन्यास को मराठी में 'कादंबरी' और गुजराती में 'नवल कथा' कहते हैं।

2.2 उपन्यास की परिभाषा

उपन्यास को गहराई से जानने और समझने के लिए विद्वानों के मत जानना आवश्यक हैं। इसलिए निम्नलिखित रुप से उपन्यास की परिभाषा बताई गयी हैं:

डॉ. श्यामसुन्दर दास(1875) के अनुसार; "उपन्यास मनुष्य जीवन की काल्पनिक कथा है।"[1]

प्रेमचंद(1880) के अनुसार; "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र-मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"[2]

बाबू गुलाबराय(1888) के अनुसार; "उपन्यास कार्य-कारण-श्रृंखला में बंधा हुआ वह गद्य-कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित वास्तविक काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव-जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।"[3]

राल्फ फॉक्स(1900) के अनुसार; "उपन्यास केवल कथात्मक गद्य नहीं है, यह मानव जीवन का गद्य है। यही पहली कला है, जिसने संपूर्ण मानव को अंगीकार किया है और उसे अभिव्यक्त करने की चेष्टा की है।"[4]

नंद दुलारे वाजपेयी(1906) के अनुसार; "उपन्यास से आजकल गद्यात्मक कृति का अर्थ लिया जाता है, पद्य बद्ध कृतियाँ उपन्यास नहीं हुआ करते हैं।"[5]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी(1907) के अनुसार; "उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए गद्य के प्रचार के साथ-साथ उपन्यास प्रचार हुआ है। आधुनिक उपन्यास केवल कथा मात्र नहीं है और पुरानी कथाओं और आख्यायिकाओं की भांति कथा-सूत्र का बहाना लेकर

उपमाओं, रूपकों, दीपकों और श्लेषों की छटा और सरस पदों में गुम्फित पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है। यह आधुनिक वैक्तिकतावादी दृष्टिकोण का परिणाम है।"[6]

डॉ. सुरेश सिन्हा के अनुसार; "जीवनीपरक उपन्यास हिंदी साहित्य की एक नूतन विधा है। जिसमें अतितकालिन पात्र, वातावरण एवं घटनाओं के ज्ञात तथ्यों को संभाव्य परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में, मनोवैज्ञानिक एवं कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।"[7]

डॉ. शिवदान सिंह चौहान(1918) के अनुसार; "आधुनिक उपन्यास को साहित्य का एक नया और संशिलाट रूप विधान बताया है, जिसके क्षेत्र एवं संभावनाएँ अपरिसीमित है।"[8]

डॉ. लालासाहब सिंग(1940) के अनुसार; "जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास विधा का वह रूप है, जो किसी व्यक्ति विशेष के वास्तविक जीवन चरित्र के आधार पर लिखा गया हों।"[9]

डॉ. भागीरथ मिश्र(1947) के अनुसार; "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य एक उपन्यास कहलाता है।"[10]

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से ऐसा प्रतीत होता है, कोई भी परिभाषा पूर्ण रूप से सही और गलत नहीं हो सकती। विद्वानों ने अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर अपने विचार प्रकट किए हैं। विभिन्न विद्वानों की

दृष्टि से उपन्यास की परिभाषा में भिन्नता हो सकती है, क्योंकि हर एक विद्वान की सोच और विचारधारा अलग-अलग होती है। जैसे प्रेमचंद ने इसे मानव जीवन का चित्र कहा है, जबकि श्यामसुंदर दास ने उपन्यास को मनुष्य जीवन की काल्पनिक कथा कहा है। यह दर्शाता है कि उपन्यास की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं है, बल्कि यह विभिन्न दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

2.3 उपन्यास के तत्त्व

उपन्यास के निर्माण के लिए अधिकतर विद्वानों ने प्रमुख छः तत्त्व माने हैं। सर्वप्रथम उपन्यास में घटनाएँ होती हैं, जो कि उपन्यास के शरीर का निर्माण करती हैं। यही घटनाएँ उपन्यास के जिस अंश में स्पंदित की जाती हैं, उन्हें कथावस्तु कहते है। यह कथावस्तु और घटनाएँ मनुष्यों पर आधारित होती हैं, यही मनुष्य पात्र कहलाते हैं। इन पात्रों की पारस्परिक बातचीत को वार्तालाप या कथोपकथन कहा जता है। पात्रों के आस-पास की परिस्थितियाँ, वातावरण, देश-काल इत्यादि का वर्णन वातावरण में किया जाता है। सम्पूर्ण पात्र तथा कथावस्तु किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार की अभिव्यक्ति करते है, उनका सृजन किसी विशेष आदर्श को लेकर किया जाता है, यही आदर्श-निरूपण उपन्यास का पाँचवाँ तत्त्व उद्देश्य होता हैं। उपन्यास वर्णन की एक विशिष्ट पद्धति होती

है जिसे शैली कहा जाता है। इस प्रकार उपन्यास के निर्माण में ये मुख्य तत्त्व सहायक हैं; कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल और वातावरण, उद्देश्य तथा शैली।[11](आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी; साहित्य विवेचन) जिसके बारे में निम्नलिखित रूप से विस्तार से बताया गया है:

2.3.1 कथानक

उपन्यास की किसी मूल कहानी को कथानक कहा जाता है। कथावस्तु उपन्यास का प्रथम तथा महत्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। जिसमें अनेक घटनाएँ होती हैं। इसमें उपन्यासकार अपने उद्देश्य के अनुसार जीवन की अनेक प्रकार की घटनाओं में एकता लाता है और अपनी कल्पना के सहारे इन कथानकों की कल्पना करता है। अरस्तू के अनुसार "कथानक के तीन अंग होते हैं; प्रारम्भ, मध्य और अंत। प्रारम्भ में कथा का स्वाभाविक विकास, जिज्ञासा और भविष्य की सामग्री का बहुत हल्का-सा आभास रहता है। मध्य में कथा के अंत और आरम्भ का समन्वय तथा अंत में कथा के प्रारम्भ का प्रतिफलित परिणाम होता है। कथावस्तु जिन उपकरणों से मिल कर बनती है उनमें कथासूत्र(थीम), मुख्य कथानक(प्लॉट), प्रासंगिक कथाएँ या अन्तर्कथाएँ(एपीसोड्स), उप

कथानक(अन्डर प्लॉट), पत्र, समाचार, प्रामाणिक लेख(डाक्यूमेंट्स), डायरी के पन्ने आदि है"।[12] कथानक में मौलिकता तथा सत्यता आवश्यक है। उसके साथ रोचकता से कथानक को आगे बढ़ाना लेखक का कर्तव्य रहता है। कथावस्तु का आधार सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथा काल्पनिक भी हो सकता है। परंतु उसमें मानव जीवन की व्याख्या मानव जीवन के विविध पहलुओं की कथात्मक अभिव्यक्ति जरूरी है।

2.3.2 पात्र एवं चरित चित्रण

उपन्यास का द्वितीय महत्त्वपूर्ण तत्व पात्र एवं चरित्र चित्रण है। उपन्यास की घटनाएँ जिनसे संबंधित होती है या जिनको लेकर उनका घटित होना दिखाया जाता है, वे पात्र कहलाते हैं। पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार सजीवता, सत्यता और स्वाभाविकता के साथ जीवन के पहलुओं को समाज के समक्ष रखता है। कथावस्तु के अनुरूप पात्र का चयन करना आवश्यक हैं। आधुनिक युग में पात्र संबंधित प्राचीन और नवीन धारणा में पर्याप्त अंतर आया है। पहले मुख्य पात्र नायक और नायिका पर विशेष बल दिया जाता था। आज अन्य पात्रों को भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उपन्यास में दो प्रकार के पात्र होते हैं; मुख्य पात्र और गौण पात्र।

मुख्य पात्र किसी भी रचना का केंद्र बिंदु होता है, जैसे कि नायक, नायिका, प्रति नायक आदि। गौण पात्र, वे पात्र होते हैं जो मुख्य पात्र को उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं। ये पात्र दोस्त, परिवार के सदस्य, अजनबी आदि भी हो सकते हैं। गौण पात्रों के पास वे विशेष गुण होते हैं जो मुख्य पात्र की सफलता के लिए आवश्यक होते हैं। इन गुणों की वजह से ही उपन्यास में मुख्य पात्र को समर्थन मिलता है और उसके कार्यों को पूरा करने में मदद मिलती है। ये गुण मुख्य पात्र को समझने में हमारी मदद करते हैं और उपन्यास को मजबूत बनाते हैं।

2.3.3 कथोपकथन

उपन्यास में कथानक को गति देने, पात्रों की व्याख्या के साथ उनका चारित्रिक विकास करने तथा लेखक के जीवन दर्शन की व्याख्या करने का कार्य पात्रों के कथोपकथन से होता है। कथोपकथन से पात्रों के भावों की अभिव्यक्ति सहज और स्पष्ट रूप से होती है। इसलिए कथोपकथन में पात्रानुकूलता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता तथा उपयुक्तता आदि गुणों का होना जरूरी है। स्पष्ट और सुबोध कथोपकथन उपन्यास की रोचकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। उपन्यास के निर्माण में पात्रों के सजग अंकन तथा भावाभिव्यक्ति के लिए कथोपकथन तत्त्व

आवश्यक होता है। पात्रों के वार्तालाप में स्वाभाविकता का होना अत्यन्त आवश्यक हैं। प्रेमचंद ने कथोपकथन के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि “उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना कम लिखा जाए, उतना ही उपन्यास सुंदर होगा। वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को, जो किसी चरित्र के मुंह से निकले उसके गनो- भावों और चरित्र पर कुछ-न-कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक, परिस्थितियों के अनुकूल सरस और सूक्ष्म होना जरूरी है"।[13]

2.3.4 देशकाल-वातावरण

पात्रों के चित्रण को पूर्णता और स्वाभाविकता देने के लिए देशकाल या वातावरण का ध्यान रखना जरूरी है। घटना का स्थान समय, तत्कालीन विभिन्न परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान उपन्यासकार के लिए आवश्यक है। मनुष्य जिस परिवेश में रहता है उसका असर उस पर रहता है। वह किस परिस्थिति में किस काल में चित्रित किया जाता है यह स्पष्ट होना आवश्यक है। इसलिए उपन्यास में वातावरण का सूक्ष्म मूल्यांकन किया जाता है चाहे संक्षेप में चाहे विस्तार से। सभी प्रकार के उपन्यासों में देशकाल के वर्णन की आवश्यकता रहती है, परंतु ऐतिहासिक उपन्यास निर्माण में

उपन्यासकार को अधिक सतर्क रहकर देशकाल का चित्रण करना पड़ता है। देशकाल के अंतर्गत किसी भी राष्ट्र या समाज की वेशभूषा, रीति-रिवाज एवं सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां आदि सम्मिलित है। कथानक को अधिक स्वाभाविक बनाने के लिए उचित वातावरण आवश्यक होता है। डॉ. गुलाबराय के विचार से "कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देशकाल के बंधन में रहते हैं। यदि वे भगवान की भाँति देशकाल के बंधनों से परे हो तो वे भी हम लोगों के लिए रहस्य बन जायेंगे। इसलिए देशकाल का वर्णन आवश्यक हो जाता है। जिस प्रकार बिना मॅगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता और घटना-क्रम के समझाने के लिए भी उसकी आवश्यकता होती है।"[14] ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए यह महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए यदि कोई लेखक महाभारत जैसे विषयों को सूट-बूट में चित्रित करें तो यह उसकी ऐतिहासिक अज्ञानता का परिचय होगा और रचना हास्यास्पद हो जाएगी। देशकाल-वातावरण का वर्णन सन्तुलित होना चाहिए, जहाँ तक वह कथा-प्रभाव में आवश्यक हो तथा पाठक को वह काल्पनिक न होकर यर्थाथ लगे।

2.3.5 भाषा - शैली

भाषा-शैली का उपन्यास के तत्वों में अपना प्रमुख और महत्वपूर्ण स्थान होता है। "उपन्यास में भाषा के चार रूप में प्रयोग होता है। वे चार रूप है स्थिर, गतिशील, अलंकृत और काव्यात्मक। स्थिर भाषा; भाषा के सामान्य प्रयोग के कारण कही जाती है। जिस प्रकार इतिहास-लेखक या दार्शनिक तथ्य-निरूपण के लिए भाषा का प्रयोग करता है, उसी प्रकार स्थिर भाषा का उपन्यासकार भी। भाषा का तथ्य-निरूपण रूप साहित्य के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध नहीं होता, उसका अभिव्यंजक रूप ही श्लाघ्य सिद्ध होता है। इसी कारण स्थिर भाषा का प्रयोग साहित्यिक रचनाओं में समादृत नहीं हो पाता। उपन्यास-रचना में गतिशील भाषा सर्वाधिक उपयुक्त सिद्ध होती है। पात्रों की मन स्थिति, परिवेश आदि के आधार पर ही भाषा का रूप-निर्माण होना चाहिए। सफल साहित्यकार की भाषा गद्यात्मक होती है, क्योंकि समस्त परिस्थितियों को देखते हुए वह अपनी भाषा का रूप-निर्माण करता है और उसका मूल उद्देश्य रहता है अभिव्यंजन। अभिव्यंजन जिस किसी भी रूप मे सुंदर रीति से स्पंदित हो सके, उसे वह अपना लेता है। गतिशील भाषा में स्थिर, अलंकृत और काव्यात्मक सभी रूप सन्निविष्ट हो जाते है। विशेषता केवल इतनी रहती है कि उक्त सभी रूप परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार में आते हैं

और कही भी उनका अतिशय दृष्टिगत नहीं होता।"[15] उपन्यास को अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए सरल भाषा शैली का प्रयोग करना चाहिए। भाषा इतनी प्रभावी होनी चाहिए जिससे पाठकों के सम्मुख पात्रों का चित्र उपस्थित हो सके। भाषा में मुहावरे, कहावतें, आलंकारिता का प्रयोग करने से भाषा में प्रवाह तथा रोचकता भी आती है। भाषा कहीं क्लिष्ट ना हो इस संदर्भ में लेखक को सतर्क रहना पड़ता है चाहे वह उपन्यास ऐतिहासिक हो या पौराणिक। प्रत्येक लेखक अपनी शैली का निर्माण स्वयं करता है। रचना में शैली का विशेष महत्व होता है। उपन्यास में वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया जाता है।

2.3.6 उद्देश्य

उपन्यास का अंतिम तत्त्व उद्देश्य है। उपन्यास में उद्देश्य का मुख्य स्थान होता है। हर एक उपन्यास का उद्देश्य होता है, जैसे कि संदेश पहुंचाना या समाज में बदलाव लाना, पाठकों को मनोरंजन प्रदान करे, सोचने-समझने की क्षमता विकसित करें, उपदेश दें, और मानव जीवन के रहस्यों को उजागर करें। इस प्रकार, उपन्यास एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और धार्मिक संदेश का संचार करता है, जो पाठकों को जीवन की सामाजिक, नैतिक

और आध्यात्मिक पहलुओं के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। इसके अलावा, उपन्यास लोगों को उपदेश देने का भी माध्यम हो सकता है, जो जीवन के मूल्यों और नैतिकता को समझाता है। उपन्यास आमतौर पर मानव जीवन के रहस्यों को उजागर करने का भी प्रयास करता है, जिससे पाठकों को समझने और सोचने की प्रेरणा मिले। प्राचीन काल में उपन्यास की रचना के प्रायः दो मूल उद्देश्य हुआ करते थे। एक तो उपदेश की वृत्ति, जिसके अंतर्गत नैतिक शिक्षा प्रदान करना था दूसरा केवल मनोरंजन, जिसका आधार कौतूहल अथवा कल्पना हुआ करता था। आज उपन्यास में जीवन का यर्थाथ चित्रण होता है। इसलिए उपन्यासकार, जीवन के साधारण और असाधारण व्यापार का मानव जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका आकलन करता हैं। अतः सभी उपन्यासों में कुछ विशेष विचार और सिद्वान्त स्वतः ही आ जाते हैं। साहित्यकार की निर्मित के कुछ विशिष्ट हेतु होते हैं। उपन्यासकार का एक उद्देश्य होता है पाठकों का मनोरंजन करना। परंतु इसके साथ सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट करना, अपने नये विचारों को पाठकों के सम्मुख रखना आदि उद्देश्य भी निहित होते हैं। उपन्यासकार अपने पात्रों के द्वारा अपने विचारों को वाणी देता है।

2.4 उपन्यास के प्रकार

उपन्यास एक महत्वपूर्ण साहित्यिक रूप है जो विभिन्न प्रकारों में प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक उपन्यास का अलग-अलग रूप, तरीका, और उद्देश्य होता है। उपन्यासों को उसकी विषयवस्तु, शैली, और उद्देश्य के आधार पर अलग-अलग भागों में विभाजित किया जाता है। विषयवस्तु के आधार पर लिखे गए उपन्यास में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोरंजन, और आंचलिकता आदि शामिल होते हैं। उपन्यास के तत्व के आधार पर: घटना और चरित्र प्रमुख होते हैं, शैली के आधार पर वर्णनात्मक, विवरणात्मक, पत्रात्मक, आत्मकथात्मक, और डायरी शैली आदि होती है। उपन्यासों को उसकी विषय वस्तु, शैली, उद्देश्य आदि के आधार पर अलग-अलग भागो में विभाजित किया जाता है। विषयवस्तु के आधार पर लिखे गये उपन्यास में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोरंजन और आंचलिकता आदि। उपन्यास के तत्व के आधार पर : घटना व चरित्र प्रधान आदि। शैली के आधार पर, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, पत्रात्मक, आत्मकथात्मक और डायरी शैली। इन्हीं कुछ प्रकारों की बात निम्नलिखित है:

2.4.1 जीवनीपरक उपन्यास

जीवनीपरक उपन्यासों में जीवनी इतिहास, चरित्र और कल्पना का अनोखा मिश्रण होता है। वास्तविकता की गहरी छाप से

भावनात्मक तथा कलात्मकता का सुंदर मिलन होता है। जीवनीपरक उपन्यासों में किसी के कार्य का वर्णन रोचकता एवं प्रभावी रूप से किया जाता है। पाठकों को ऐसी रचनाएँ किसी व्यक्ति विशेष के परिचय में सहायक हो जाती हैं और प्रेरक भी सिद्ध होती हैं। इस विधा द्वारा इतिहास समर्पित साहित्यकारों या समाज-सेवीयों के व्यक्तित्व के समग्र पहलुओं को दर्शाने की कोशिश की जाती है। इन उपन्यासों में व्यक्तित्व की प्रधानता होती है जीवनी-नायक के सजीव वर्णन के साथ उनके विचार तथा कार्य को वाणी देने का प्रमुख कार्य जीवनीपरक उपन्यास करते हैं। "जीवनीपरक उपन्यास को 'जीवनी' की दृष्टि से भी देखते हैं और 'उपन्यास' की दृष्टि से भी। श्री गाडगील की मान्यता है कि जीवनी और उपन्यास जैसी दो भिन्न प्रवृत्तियों का संकर 'जीवनीपरक उपन्यास' में होता है"।[16]

2.4.2 घटना-प्रधान उपन्यास

घटना-प्रधान उपन्यास में कथावस्तु का निर्माण घटनाओं के माध्यम से होता है। ये घटनाएँ आमतौर पर आश्चर्यजनक होती हैं और पाठकों को आकर्षित करती हैं। इन उपन्यासों की मुख्य विशेषता उनकी मनोरंजकता होती है। कथावस्तु प्रेमाख्यान, पौराणिक कथाएं, जासूसी, और तिलस्मी घटनाओं पर आधारित

होती है। इन उपन्यासों का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ पाठक को जागरूक रखना होता है। कुछ उपन्यासों में एक घटना की प्रमुखता होती है और उसके चारों ओर विभिन्न घटनाएं एकत्रित की जाती हैं। प्रायः पात्रों को संघर्ष का सामना करना पड़ता है, लेकिन अंत में वे सफल होते हैं और उपन्यास का अंत सुखद होता है।

2.4.3 चरित्र-प्रधान उपन्यास

चरित्र-प्रधान उपन्यास वे होते हैं जिनमें कथानक में घटना-क्रम पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, बल्कि पात्रों के चरित्र के विकास पर जोर रखा जाता है। इन उपन्यासों में पात्र स्वतंत्र रहते हैं और उनका विकास कथावस्तु के संगत होता है। ये उपन्यास चरित्रों के विकास पर ही केंद्रित होते हैं। चरित्र-प्रधान उपन्यास मानव-जीवन की सभी पहलुओं को व्यक्त करते हैं और इस प्रकार का उपन्यास सामाजिक विशेषताओं का प्रदर्शन करता है। ऐसे उपन्यासों में ऐसा कोई एक निश्चित केंद्र नहीं होता जिसके चारों ओर घटनाएँ विकसित हो सकें।

2.4.4 ऐतिहासिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास में लेखक किसी प्राचीन पात्र अथवा युग विशेष का चित्रण करता है। अपने ऐतिहासिक ज्ञान तथा कल्पना द्वारा वह अपने प्रतिपादित ऐतिहासिक युग की मान्यताश्रो, विश्वासो तथा वातावरण का सजाव चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। ऐतिहासिक पात्रों अथवा युग पर विशेष ध्यान रखना ही उसका मुख्य उद्देश्य रहता है। वे सदैव यह ध्यान रखते हैं कि उनकी कहानी और चरित्रों में किसी भी इतिहास-विरोधी तत्व का समावेश नहीं हो। लेखक कथानक को रोचक बनाने के लिए कल्पना का सही उपयोग करते हैं। ऐतिहासिक उपन्यास का अन्य उपन्यासों से भेदक तत्त्व है, देशकाल और वातावरण का निर्माण। अन्य उपन्यासों में भी इस तत्त्व का विशेष महत्व होता है, किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है; क्योंकि इसी आधार पर लेखक ऐतिहासिकता की प्रभाव-सृष्टि कर सकता है।

2.4.5 सामाजिक उपन्यास

सामाजिक उपन्यास में सामाजिक युग के विचार, आदर्श और समस्याएँ चित्रित रहती है। सामाजिक समस्याएँ इन उपन्यासों का मुख्य विषय होता है। ऐसे उपन्यास राजनीतिक और

सामाजिक धारणाओं और मतवादो से विशेष प्रभावित होते है और लेखक अपने समय के चित्रण के लिए पात्रो की रचना करता है। उपन्यास के इन मुख्य भेदो के अतिरिक्त बहुत-से अन्य प्रकार के उपभेद किये जा सकते हैं। इनमे भाव-प्रधान तथा नाटकीय उपन्यास मुख्य है। भाव-प्रधान उपन्यासों में न तो कथानक का विचार रखा जाता है और न चरित्र-चित्रण का। उनकी शैली भी अत्यन्त भावुकतापूर्ण, चित्रमयी और रंगीन होती है। नाटकीय उपन्यासों में पात्रों तथा कथानक दोनो का ही स्वतंत्र विकास होता है। न तो कथानक ही पात्रों पर श्राश्रित होता है, और न पात्र ही कथानक पर। किन्तु दोनों एक-दूसरे से असम्बंधित नहीं रहते।

उपर्युक्त उपन्यास के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया गया है, जो उपन्यास की विशेषताओं और उनके उद्देश्यों को समझने में मदद करता है। उपन्यास का महत्व और अद्भुतता इसमें प्रकट होती है, जो हमें विभिन्न रुपों से परिचित करता है। यहाँ उपन्यास के प्रमुख प्रकारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, जो हमें इस कला के विविध आयामों को समझने में मदद करता है। उपन्यास के विभिन्न पहलुओं का विवेचन किया गया है। प्रत्येक उपन्यास का अपना विशेष रूप, तरीका और उद्देश्य होता है। इस तरह, उपन्यास विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक पहलुओं को अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

1. दास, डॉ. श्यामसुंदर. “साहित्यालोचन”, प्रकाशक: रामचंद्र वर्मा साहित्य-रत्न-माला कार्यालय, काशी, प्रथम संस्करण: 1988, पृ. 166
2. प्रेमचंद, “कुछ विचार”, सरस्वती-प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण: 1939, पृ. 41
3. डॉ. गुलाबराय, “काव्य के रूप”, प्रकाशक भगवतीदेवी गुप्ता प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण: 1958, पृ. 187
4. फॉक्स. राल्फ, “उपन्यास और लोक जीवन”, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 1957
5. वाजपेयी, नंददुलारे. “आधुनिक साहित्य”, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 2003
6. द्विवेदी, ड़ॉ हजारी प्रसाद. “साहित्य का साधी”, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 1957, पृ. 71
7. चौहान, शिवदान सिंह. “हिंदी गद्य साहित्य”, (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली व बंबई से) प्रथम संस्करण: 1952, पृ. 71
8. सिंग डॉ. लालासाहब. “उपन्यास”, (इलाहाबाद, साहित्य-निलय प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 1982, पृ. 42

9. सिन्हा, डॉ. सुरेश. “हिंदी उपन्यास: उद्भव और विकास”, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं. 1972), पृ. 42.
10. मिश्र, डॉ० भगीरथ. “काव्यशास्त्र”, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण, जुलाई 1902
11. साहित्य-विवेचन, “हिन्दी-साहित्य के विभिन्न अगो का सैद्धान्तिक एवं इतिहासिक विश्लेषण”, क्षेमचन्द्र 'सुमन' योगेन्द्रकुमार मल्लिक, भूमिका-लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, 1955, आत्माराम एण्ड संस प्रकाशक, प्रथम संस्करण: 1952
12. अरविन्दकुमार. हिन्दी उपन्यास, (सपादिका सुषमा प्रियर्दाशनी) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशक दिल्ली, प्रथम संस्करण: 1955
13. प्रेमचंद. “कुछ विचार”, कापीराइट सरस्वती-प्रेस, बनारस 1939, पृ. 103
14. गुलाबराय, “काव्य के रूप”(संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण) एम. ए. सोल एजेण्ट आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता काश्मीरी गेट दिल्ली-६, प्रथम संस्करण: 1958, पृ. 73
15. शुक्ल, डॉ० रामलखन. “हिन्दी उपन्यास कला”, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७, प्रथम संस्करण: 1972,

16. गाडगील, गंगाधर. प्रतिनिधि समीक्षा,(संपादक सुधीर रसाल), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण: 2000, दिल्ली-110032

अध्याय 3 : 'लोई का ताना' उपन्यास का तात्विक विश्लेषण

लोई का ताना रांगेय राघव जी का जीवनीपरक उपन्यास हैं। यह उपन्यास सन् 1954 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में महान कवि कबीर के जीवन पर प्रकाश डाला है। इसमें लेखक ने कबीर के साधारण जीवन को केंद्र बनाया है। कबीर के विचार सबसे अलग थे। वे किसी भी धर्म को नहीं मानते थे। उनका सिर्फ मनुष्यत्व का धर्म था। पढ़े-लिखे नहीं होने के बावजूद उनका जीवन, ईश्वर, धर्म आदि संबंधी विचार सुनकर विद्वान विनम्र होते थे। कबीर के विविध रूपी चरित्र को लेखक ने 'लोई का ताना' में चित्रित किया है। लोई कबीर की पत्नी थी। पति के विचारों में सहयोग देकर उसके हर कार्य की प्रेरणा बनी रहने वाली भारतीय स्त्री थी। कबीर और लोई के विचारों को एक प्रगतिवादी स्वर के रूप में उभारने का सफल प्रयास लेखक ने इस कृति में किया है।

3.1 कथानक

'लोई का ताना' उपन्यास में लेखक ने कबीर के सामान्य जीवन का चित्रण किया है। कथानक को अलग-अलग उपभागों में विभाजित किया है। जैसे; उपसंहार, उपसंहार से पहले, सूर्यास्त हो गया, पिता का बाना,

लोई का ताना, आरंभ, मरजीवे को तो देखो, उसकी राह अजीब थी आदि। कथानक की शुरुआत 'उपसंहार' नामक अध्याय में कमाल के परिचय से होती है। उपन्यास में कमाल को कबीर के पुत्र के रूप में दर्शाया है। "'मैं कमाल हूँ। मेरे बाप का नाम कबीर था और मां का नाम लोई था"।[1] कबीर केंद्र में है किंतु उनके जीवन के महत्वपूर्ण लोग उनकी पत्नी, पुत्र आदि के चरित्र को भी व्यापकता देने का प्रयास किया है। रांगेय राघव ने कबीर के जीवन पर आधारित प्रस्तुत उपन्यास का पुनर्मूल्यांकन किया है। इसमें कबीर के जीवन से जुड़ी घटनाओं का वर्णन किया है। इस उपन्यास के माध्यम से यह भी पता चलता है कि कबीर को अनेक समस्ययों का सामना करना पड़ा था और उसे हर किसिने रोखने कि कोशिश की थी। इसके संदर्भ में कमाल कहता है, "उसे किसने नहीं रोका! उसे सुलतान लोदी ने रोका, मुल्लाओं ने रोका, महंतों मठाधीशों, और पण्डितों ने रोका, उसे पेशेवर साधुओं और संन्यासियों ने रोका, उसे नाथ जोगियों ने घोल कर समाप्त कर देने की चेष्टा की, उसे सूफियों ने अपने संप्रदाय में मिलाकर मिटा देने की कोशिश की, लेकिन वह!! वह नहीं मिटा। न सुलतान की तलवार उसे काट सकी, न मुल्लाओं के फ़तवे उसका सिर झुका सके। महंतों, मठाधीशों और पण्डितों की जीभ उसके सामने लड़खड़ा गई"।[2] 'सूर्यास्त हो गया' इस अध्याय में, वृद्धावस्था के कारण कबीर की मृत्यु होती है। उनकी मृत्यु के बाद, उनके शव को लेकर काफी विवाद उत्पन्न होता

है। हिंदू लोग चाहते हैं कि उनका अंतिम संस्कार हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार हो, जबकि मुस्लिम लोग चाहते हैं कि उनका अंतिम संस्कार मुस्लिम रीति-रिवाज के अनुसार हो। तब कमाल कहता है कि वे इन दोनों धर्मों से परे हैं। कबीर जातिभेद, धर्मभेद, मूर्तिपूजा, पूजा-पाठ, बाह्याडंबर आदि के खिलाफ थे। अपने विचारों द्वारा लोगों को सही मार्ग दिखाने कि कोशिश कर रहे थे। कबीर के स्पष्ट विचारों से सिकंदर लोदी भी भयभीत था। उसने कबीर की हत्या के लिए कई प्रयास किए। कबीर से प्रभावित होकर पंद्रह वर्ष कि लोई उनसे प्रेम करने लगी और उनका वह प्रेम विवाह में परिणित हो गया। लोई को एक आदर्श पत्नी के रुप में प्रस्तुत किया है। तत्कालीन परिस्थितियों के चित्रण के साथ कथानक में मानवतावाद को श्रेष्ठत्व प्रदान करने वाले कबीर का प्रभावी परिचय दिया है। अपने विचारों द्वारा क्रांतिकारी जोश निर्माण करने वाले कबीर की विचारधारा जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कथानक के द्वारा हुआ है। कबीर की सोच के माध्यम से जातिवाद, धर्मवाद और अंतरंग विचारों के प्रति लोगों में संवेदनशीलता उत्पन्न होती है। उनकी विचारधारा ने समाज में समानता, सामाजिक न्याय आदि के प्रति जागरूकता फैलाई। उनकी रचनाओं में व्यक्त की गई मानवता और साहित्यिक शैली ने लोगों को उनके दिलों तक पहुंचाया और उन्हें जीवन के मूल्यों को समझने की प्रेरणा दी। इस प्रकार, कथानक में कबीर के विचार और आदर्शों का प्रतिपादन किया गया है जो लोगों को समझदार

और सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा देता है। उपन्यास में कबीर के विचार के संदर्भ में दोहों का उल्लेख है, उन्हें निम्नलिखित प्रस्तुत किया है:

"जा कारन जग ढूँढ़िया, सो तो घटि ही मांहि।

परदा दिया भरम का, ताते सूझे नाहिं॥"[3]

अर्थात; "जिस भगवान को तू सारे संसार में ढूँढता फिरता है। वह मन में ही है। तेरे अंदर भ्रम का परदा दिया हुआ है इसलिए तुझे भगवान दिखाई नहीं देते।"[4]

"मारग चलतै जो गिरे, ताको नाही दोस

कहे कबीर बैठा रहे, ता सिर करड़ै कोस॥"[5]

अर्थात; कोशिश करते हुए जो गिरता है उसको कभी दोष न दें, लेकिन बिना कोशिश सिर्फ बैठा रहना सरासर गलत है।

"जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाही।

प्रेम गली अति साँकरी, ता मैं दो न समांहि॥"[6]

अर्थात; "जब मेरे अंदर मैं (अहंकार) था तब परमात्मा नहीं था, अब परमात्मा है तो अहंकार मिट गया यानी परमात्मा के दर्शन से अहंकार मिट जाता है।"[7]

"छिनहीं चढ़ै छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय।

अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय॥"[8]

अर्थात; जो छिन (तुरंत) में उतरे और छिन में चढ़े उसे प्रेम मत समझो। जो कभी भी घटे नहीं, हरदम शरीर की हड्डियों के भीतर तक में समा जाये वही प्रेम कहलाता है।

"कांच कथीर अधीर नर, ताहि न उपजै प्रेम।

कह कबीर कस नीस है, कै हीरा कै हेम॥"[9]

अर्थात; कंकड़ के समान कठोर हृदय वाले व्यक्ति के मन में कभी प्रेम नहीं उपजता है। कसनी तो हीरा या सोना सहता है अर्थात प्रेम की कसौटी पर तो सच्चे भक्त ही ठहर पाते हैं।

"कबीर सीप समुद्र की, रटै पियास पियास।

और बूँद को ना गहै, स्वाति बूँद की आस॥"[10]

अर्थात; "कबीर कहते हैं कि समुद्र की सीपी प्यास प्यास रटती रहती है। स्वाति नक्षत्र की बूँद की आशा लिए हुए समुद्र की अपार जलराशि को तिनके के बराबर समझती है। हमारे मन में जो पाने की ललक है जिसे पाने की लगन है, उसके बिना सब निस्सार है।"[11]

"सबै रसायन हम पिया, प्रेम समान न कोय।

रंचन तन में संचरै, सब तन कंचन होय॥"[12]

अर्थात; "मैंने संसार के सभी रसायनों को पीकर देखा किन्तु प्रेम रसायन के समान कोइ नहीं मिला। प्रेम अमृत रसायन के अलौकिक स्वाद के सम्मुख सभी रसायनों का स्वाद फीका है। यह शरीर में थोड़ी मात्रा में भी प्रवेश कर जाये तो सम्पूर्ण शरीर शुद्ध सोने की तरह अद्भुत आभा से चमकने लगता है अर्थात शरीर शुद्ध हो जाता है।"[13]

3.2 पात्र और चरित्र-चित्रण

'लोई का ताना' में प्रमुख पात्रों में कबीर, लोई, नीमा आदि का उल्लेख किया है। इसमें कबीर जैसे एक ही पात्र पर ध्यान आकर्षित न करके अन्य पात्रों के साथ न्याय किया है। इन पात्रों के चित्रण के साथ उनके विचारों का परिचय दिया है। गौण पात्र में कमाल, रामानंद, सिकंदर लोदी, हरनाथ, उज्झकनाथ देवीलाल, विक्रम आदी।

3.2.1 मुख्य पात्र :

3.2.1.1 कबीर

डॉ. रांगेय राघव जी ने 'लोई का ताना' उपन्यास में कबीर को प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। कबीर अपनी माँ को

जुलाहे के काम में हाथ बंटाता था। वह पढ़ना लिखना नहीं जानता था। फ़िर भी मौखिक रुप से दोहे गाते रहते थे। उनकी विचारधारा उनके पदों में गहरे रूप से प्रकट होती है। उन्होंने भेदभाव, मूर्ति-पूजा अंधश्रद्धा, धर्म के नाम पर चलने वाले अत्याचार आदि का विरोध किया है। गहरे चिंतक होने के कारण उनके पदों में जीवन-मृत्यु विषय पर अनेक बातें मिलती हैं। जैसे कि; "सत्य यही है कि इस संसार में दो नियम है, जन्म और मृत्यु। मैं मृत्यु से डरता नहीं। किंतु केवल इसलिये सोचता हूं कि मनुष्य इस जीवन में असंख्य पाप और हिंसा करके अपने लिये सुख एकत्र करने में लगा रहता है। वह यह भूल जाता है कि मृत्यु अवश्यम्भावी है, वह निश्चय ही आती है।"[14] इस प्रकार कबीर ने मनुष्य को सही मार्ग दिखाने की कोशिश कियी तथा जनभाषा में प्रेम का संदेश दिया। कबीर अपनी निर्भीकता, स्पष्टता, और उच्च आदर्शों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका पात्र लेखक के उद्देश्य को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करता है। और उनके विचारों ने लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। कबीर विनयशील, त्यागी, कार्यकुशल, लोकप्रिय, बुद्धिमान, स्वाभिमानी तथा दृढ़ तपस्वी भी हैं। उसकी निर्भीकता तथा स्पष्टता उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। इस प्रकार कबीर का चिंतन उच्च आदर्शों से प्रेरित है। प्रेम,

सेवा, त्याग आदि का पालन करते हुए वे अपना गृहस्थ धर्म निभाते हैं।

3.2.1.2 लोई

लोई उपन्यास की नायिका है। उसे सशक्त पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लोई के अनेक रूपों का चित्रण किया है। कबीर की प्रेयसी, कमाल की माता, स्पष्ट तथा निर्भीक स्त्री, व्यवहारकुशल आदि। लोई कबीर की पत्नी है। उसके सुख-दुख में हमेशा साथ रही है। लोई एक गतिशील पात्र है, इसलिए उपन्यास पढ़ते समय साक्षात् लोई का दर्शन होते है। इस पर पूरा अध्याय आगे रखा है।

3.2.1.3 नीमा

नीमा; नीरू की पत्नी, कबीर की माँ, लोई की सास और कमाल की दादी है। नीरू की मृत्यु के बाद नीमा बीमार हो गई थीं और उन्हें बार-बार खांसी होती थी। फिर भी, वह कबीर के खान-पान का बहुत ध्यान रखती थी। नीमा का आखिरी समय आ गया था। नीमा ने कबीर को बुलाया और कहा कि बेटा अब मैं जा रही हूँ तो कबीर और लोई यह सुनकर रोने लगे तो नीमा कहती है, “मैं चली जाऊंगी बेटा! रोना नहीं मेरा काम

पूरा हुआ। अब मुझे दुःख नहीं है। लोई आ गई है न; वह सब संभाल लेगी छोटी तो है, पर लड़की में समझ ससुराल में ही आती है बेटा। इसे धोखा न दीजो।"[15] अंत समय में नीमा कबीर को उसकी वास्तविकता बता देती है और कहती है, "आज तक मैंने नहीं कहा बेटा पर आज कहती हूँ। एक दिन मैं और तेरा बाप नीरू चले जा रहे थे। रास्ते में एक अनाथ हाल में पैदा हुआ बच्चा पड़ा था। उसे हम उठा लाये और अपना कहकर पाल लिया। बेटा वही तू है। इतना कहकर नीमा ने सदा के लिए आंखें मूंद लीं।"[16] इस प्रकार नीमा विनयशील, त्यागी, कार्य-कुशल स्वाभिमानी के रूप में दिखाई देती है। नीमा ने कभी भी अपने जीवन के कठिन पलों में हार नहीं मानी और हमेशा सहानुभूति और स्नेह से अपने परिवार को संभाला।

3.2.2 गौण पात्र :

3.2.2.1 कमाल

कमाल को उपन्यास में कबीर और लोई के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में कमाल के द्वारा कबीरदास के जीवन के तथ्यों को सहारा दिया गया है। प्रस्तुत उपन्यास

में कमाल के बाह्य तथा प्रौढ़ रूप का सफल चित्रण किया है। कमाल के माता-पिता पढ़े लिखे नहीं थे, लेकिन उन्होंने कमाल को प्यार से पाला और उसे भेदभाव को मिटाकर समानता का संदेश दिया। वह अपने पिता के पदों को गहराई से समझता था और उनके कार्यों को आगे बढ़ाने कि कोशिश करता था। इसलिए उनके मरने के बाद कबीर के नाम पर पंथ चलाने से इनकार कर देता है और पिता के किये कार्यों को आगे बढ़ाने की कोशिश करता है। इस प्रकार कमाल एक आदर्श पुत्र के रूप में कार्य करते हुए दर्शाया है।

3.2.2.2 रामानंद

रामानंद कबीरदास के गुरु हैं। एक दिन रामानंद जी काशी आए हुए थे। कबीर रामानंद को गुरु बनाना चाहता था लेकिन लोई इससे सहमत नहीं थी। कबीर अपने घर से नाराज होकर वहाँ जाते हैं। गुरु रामानंद साधुओं की भीड़ में भव्य मुखमंडल लिए बैठे थे। प्रारंभ में, कबीर को नीच और जुलाहा कहा जाता है। “रामानंद जी ने कबीर को यही कहा कि तू जुलाहा है जुलाहे का काम कर परंतु कबीर वहीं अड़ जाता है तो रामानंद जी भी राम के बारे में सोचने पर मजबूर हो गये और अगले दिन रामानंद जी को गंगा के घाट पर अहसास हो गया कि राम

सभी का है।"[17] कबीर ने गुरु रामानंद को आखिर में अहसास करवा दिया कि राम सभी का है तो गुरु रामानंद ने भी मान लिया और कबीर को कहने लगा, "कबीर! तू जीत गया कबीर! मैं अंधा हो गया था। सारा ब्रह्मांड राम है वत्स! यह भेद मनुष्य के बनाए हुए हैं। उसके लिए सब बराबर हैं। वही राम तू है, वहीं गंगा है। राम तो है सबका।"[18] इस प्रकार अंत में गुरु रामानंद ने कबीरदास को अपना शिष्य बना लिया और निर्गुण ब्रह्म का संदेश दोनों मिलकर देने लगे। रामानंद को यहाँ एक महान आध्यात्मिक गुरु के रूप में चित्रित किया गया है, जो सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते थे और सभी को समानता की भावना सिखाते थे। उनके आदर्श और अनुभव से प्रेरित होकर कबीर ने उन्हें अपना गुरु माना और उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान का आदान-प्रदान किया।

3.2.2.3 सिकंदर लोदी

सिकंदर लोदी को प्रस्तुत उपन्यास में अत्याचारी और अन्याय करने वाला व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। कबीर के समय में सिकंदर लोदी का शासन था। वह अपराधियों को सजा नहीं देता बल्कि निरपराधियों को सजा देता था। सारी प्रजा उसी के कहे अनुसार चलती थी, परंतु कबीर नहीं चलता

था, तो उसे राजदरबार में बुलाया जाता है। सिकंदर लोदी ने कबीर को लोहे की जंजीरों में बंधवा दिया था फिर भी कबीर मुस्कराता है। कबीर पर हिंदू मुसलमानों को भड़काने का आरोप लगा हुआ था। सिकंदर लोदी ने कबीर को कुचलने का प्रयास किया, लेकिन लोई उसे बचा लेती हैं। मुगल शाह सिकंदर लोदी असत्य और हिंसा का प्रयोग करते हुए लोई की जान तो लेता है, परंतु कबीर अपने मार्ग पर अढ़ा रहकर उसे वापिस लौटने को मजबूर कर देता है। सिकंदर लोदी ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके अत्याचार किया और अपराधियों को सजा नहीं दी। वह न्याय के प्रति उल्लंघन करता था और अपनी सत्ता का दुरुपयोग करके अपराधियों को उसके कहने पर सजा देता था। उसकी आड़ में, कबीर न्याय के लिए लड़ता और अपने धर्म में स्थिर रहता था, जिससे उसके और सिकंदर लोदी के बीच में ववाद-विवाद होता था। कबीर की विचारधारा और उसका साहस उसे लोदी के अत्याचारित राज्य के खिलाफ खड़ा होने में मदद करता है। इस प्रकार, सिकंदर लोदी और कबीर के बीच का विवाद उपन्यास में महत्वपूर्ण घटना है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और न्याय के मूल्यों के बीच का विरोध प्रकट करता है। सिकंदर लोदी का चित्रण उपन्यास में एक अत्याचारी और अन्याय करने वाले व्यक्ति के रूप में किया

गया है, जो अपराधियों को सजा नहीं देता और अन्य की आत्म-स्वतंत्रता को दबाने का प्रयास करता है।

3.2.2.4 देवीलाल

कबीर देवीलाल को काका कहकर पुकारते है। वह एक जुलाहा होता है और समाज में जुलाहों को नीच समझा जाता था। उसे समाज के बारे में अच्छी तरह से जानकारी होती है और कबीर को समझाने का प्रयास करता है। देवीलाल कबीर को समझता है, परंतु कबीर छुआछूत को समाप्त करना चाहता है। देवीलाल मंदिर के पास कबीर का ध्यान रखते हुए उसे कहता है कि, "जैसे तू जानता नहीं कि यहाँ के पुजारी कितने कट्टर हैं। कोई देख लेता तो बावेला मच जाता। काशीराज तक खबर पहुँचती वे सारे जुलाहों को आड़े हाथों लेते। और मेरी तो आफत ही थी मैं ठहरा देवीलाल, उनका मनसबदारों का जुलाहा। मुझसे कहते, क्यों देवी! तूने भी जोगियों के असर में सिर उठाया है? क्या कहता मैं कबीर! चल बेटा, घर चल।"[19] देवीलाल ठाकुर से डरता है, और जब गुंसाई के लोगों ने कबीर को मारा जाता है, तो वह हिम्मत करके उसकी सहायता के लिए आता है। इस प्रकार देवीलाल अपना जीवन व्यतीत करने के लिए दूसरों

के नीचे ही दबा रहना चाहता है; क्योंकि उस समय जुलाहे बहुत ही दीन-हीन स्थिति में थे।

3.2.2.5 विक्रम

प्रस्तुत उपन्यास में, विक्रम एक हिंदू थे जो मुस्लिम समुदाय के खिलाफ थे। जब मुस्लिम लोग कबीर के अंतिम संस्कार करने का प्रयास करते हैं, तो विक्रम उनके शामिल होने का प्रतिरोध करते हैं, उन्हें कबीर को जब वह जीवित थे मारने की कोशिश करने के लिए दोषी ठहराते हुए कहते हैं, "अरे जाओ, जाओ! तुम मुसलमानों ने उन्हें जिंदा मरवा देने की कोशिश की वह हिंदू थे। और हिंदूओं के ही कंधों पर चढ़कर वे आज जाएंगे।"[20] कबीर की मृत्यु पर विक्रम कमाल को सांत्वना देता है। विक्रम अपने विचारों को स्पष्ट और उचित ढंग से व्यक्त करता है और मुस्लिमों को कड़ोरता से जवाब दे देता था। इस प्रकार विक्रम निर्भीक, स्पष्टवादी, हिंदू प्रेमी के रूप में दर्शाया है।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास के प्रत्येक गौण पुरुष-पात्र अपने जीवन में अपनी पहचान बनाने के लिए अनेक कठिनाइयों से गुजरते हैं। साथ ही अपनी भूमिकाओं में खरे उतरते हैं। चाहे वह गुरु हो या शिष्य इनमें

कोई भेदभाव दिखाई नहीं देता बल्कि समाज को सच्ची राह दिखाने की कोशिश करते रहते हैं। किसी भी पात्र का संवाद झूठा नहीं लगता बल्कि एक-एक पंक्ति में उलझे हुए प्रश्नों का हल दिखाई देता है। विक्रम का चरित्र धर्म, समाज और नैतिकता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। डॉ. रांगेय राघव जी ने अपने मुख्य पात्रों की तरह गौण पुरुष-पात्रों को भी पूरी सतर्कता के साथ चित्रित किया है। अतः इनके गौण पुरुष-पात्र भी अपने आप में महत्वपूर्ण हैं।

3.3 कथोपकथन

'लोई का ताना' उपन्यास ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित है। प्रस्तुत उपन्यास में संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, जिससे इसमें संक्षिप्त, दीर्घ, नाटकीय, विश्लेषणात्मक, स्वगत और भावनात्मक आदि प्रकार के संवाद हैं। इन संवादों के माध्यम से उपन्यास का प्रभावी विकास हुआ है। लेखक ने उपन्यास का प्रारंभ ही आत्मकथात्मक शैली के संवादों द्वारा किया है। प्रारंभ में कमाल एक यात्री को अपना परिचय देते हुए कहता है, "मैं कमाल हूं। मेरे बाप का नाम कबीर था और मां का नाम लोई। काशी में जुलाहे का काम करता हूँ।"[21] ऐसे आत्मकथानक संवाद उपन्यास में स्थान-स्थान पर प्राप्त होते हैं। इस वार्तालाप द्वारा कबीर के एक-एक सिद्धांत का परिचय पाठकों को सहज ढंग से हो जाता है।

इन संवादों में कबीर के विचारों को सामान्य स्तर पर स्पष्ट किया गया है। लोई, कबीर तथा अन्य पात्रों के कथोपकथन से कथानक विकसित होता है। लोई और कबीर के प्रेमी रूप, पति-पत्नी रूप, माता-पिता रूप आदि में बने संवाद स्वाभाविक तथा आकर्षित हैं। इन संवादों में कबीर और लोई की भावनात्मक एकता का परिचय होता है। उदाहरण के रूप में, कबीर और लोई की भावात्मक एकता का परिचय अनेक संवादों से स्पष्ट होता है। ऐसे संवादों का एक प्रसंग उल्लेखनीय है। कबीर ईश्वर प्राप्ति के लिए अचानक घर छोड़ गये थे। परंतु वास्तविकता समझते ही वापस आए। तब उन्होंने आते ही लोई से कहा, "मैं आ गया हूँ लोई। तुम गए ही कहाँ थे कंत! मुझे तो यह याद नहीं कि तुम्हारे बिना भी मैं कभी यहाँ रही थी।"[22] ऐसे भावात्मक संवादों की सृष्टि अनेक स्थानों पर हुई है। इस प्रकार उपन्यास में प्रारंभ से लेकर अंत तक संवादों द्वारा उपन्यास का विकास किया है। जिससे उपन्यास में स्वाभाविकता तथा सहजता आई है। कभी वार्तालाप पात्रों की मन स्थिति के अनुकूल होने के कारण मार्मिक बन पड़े हैं। इन्हीं संवादों के द्वारा उपन्यास के उद्देश्य को भी स्पष्टता मिली है।

3.4 देशकाल-वातावरण

'लोई का ताना' उपन्यास में कबीरकालीन समाज, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को सफलतापूर्वक निर्मित किया गया है। लेखक ने प्रत्येक जीवनीपरक पात्र के परिचय के साथ-साथ उनके आसपास के वातावरण का विवरण दिया है। कबीर के समय में जाति और वर्ण के भेद, नारी के अधिकारों की कमी और मुसलमान शासकों का क्रूर व्यवहार प्रमुख समस्याएं थीं। लेखक ने इन सभी मुद्दों को प्रसंगानुसार उजागर किया है और कथानक के माध्यम से उन्हें चित्रित किया है। जिससे पाठकों को तत्कालीन वातावरण के सहज रूप से अवगत होने में आसानी रहती है। कबीर के समय जातिगत तथा वर्गगत भेदभाव, नारी की दयनीय अवस्था, मुसलमान शासकों का क्रूर व्यवहार को स्पष्ट किया था। लेखक ने इन सभी स्थितियों को कथानक में प्रसंगानुसार चित्रित किया है। कबीर और कमाल के वक्तव्यों के सही चित्रण के साथ कबीर के देश अर्थात् स्थान का भी वर्णन उपन्यास में किया है। कबीर और कमाल के वक्तव्यों से काशी तथा मगहर आदि के परिचय संवादों से प्राप्त होते हैं। जैसे कबीर काशी के रहने वाले थे, परंतु मरते वक्त मगहर नामक स्थान में आ पहुँचे। समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा के कारण ऐसा माना जाता है कि काशी में मरने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है तो मगहर में नरक की इस बात को अलग सिद्ध करने

के लिए कबीर स्वयं वृद्धावस्था में मगहर आकर रहने लगे थे। कवि का इतिहास-सम्मत चित्रण करने के लिए तत्कालीन शासक, साधु संत आदि का भी प्रसंगानुसार संक्षेप में उल्लेख किया है। रामानंद कबीर के समकालीन गोस्वामी तुलसीदास तथा मुगल शासक सिकंदर लोदी इनमें उल्लेखनीय तथा इतिहास सम्मत पात्र हैं। ऐसे चित्रण से उपन्यास में विश्वसनीयता बढ़कर सजीवता भी आती है। इस प्रकार 'लोई का ताना' में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देशकाल-वातावरण का सजीव तथा सफल चित्रण किया है। इस उपन्यास में कबीर और उसके समकालीन व्यक्तित्वों के वाक्यों के माध्यम से काशी और मगहर जैसे स्थानों का वर्णन किया गया है। कबीर के बारे में उसके विचारों और जीवनशैली को समझने के लिए इसे उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में कबीर और कमाल के संवादों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों पर विचारों को व्यक्त किया गया है। उपन्यास के पात्रों के माध्यम से उनकी दृष्टिकोण और सोच को समझने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार, 'लोई का ताना' में देशकाल-वातावरण का सफल और संगठित चित्रण किया गया है, जो पाठकों को कबीर काल के समय की भावनाओं और सामाजिक परिस्थितियों को समझने में सहायक है।[23](डॉ. अनिल कुमार; रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास)

3.5 भाषा-शैली

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा पात्रों के भावानुसार चित्रित की गई है। 'लोई का ताना' कबीर के जीवन पर आधारित होने के कारण, कबीर जैसे निम्न जाति के लोगों की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इन्हीं कारणों से उपन्यास में बोलचाल की जनप्रचलित भाषा तथा कहीं-कहीं मिश्रित भाषा का प्रयोग किया गया है। इससे वातावरण निर्मित में सहायता मिलती है। इसमें देशकाल की विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता का निर्माण करने के उद्देश्य से कबीर काल की जनभाषा का प्रयोग किया गया है। जनभाषा के प्रभाव निर्माण हेतु हिंदी, उर्दू, मिश्रित हिंदी, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, कहावतें आदि का प्रयोग है। इस में भाषा का प्रयोग पात्रानुसार किया गया है। कबीर की भाषा की विशेषता है कि पढ़े लिखे नहीं होने के बावजूद उन्हें व्यवहार ज्ञान, दुनियादारी, सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि तथा विचार-साधना के कारण उनकी भाषा पढ़े-लिखे लोगों से बढ़कर लगती है। कबीर और लोई के संवादों में भावुकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी भरी है। उपन्यास में अनेक स्थानों का वर्णनात्मक चित्रण करते हुए आलंकारिक भाषा के प्रयोग मिलते हैं। जनभाषा के साथ संस्कृत प्रचुर भाषा के भी कहीं-कहीं रूप मिलते हैं। कबीर के जुलाहे के कार्य संबंधी अनेक शब्दों का सफल प्रयोग मिलता है जैसे पीढ़ा बिछाना, सूत की पौनी सुलझाना, चादर बीनना इत्यादि।

पात्रानुसार भाषा में सुल्तान सिकंदर लोदी तथा उनके दरबारियों की भाषा में उर्दू शब्दों का प्रयोग मिलता है। कबीर और लोई तथा कबीर और माँ नीमा आदि के संवादों में मुहावरों तथा कहावतों के प्रयोग से भाषा को काव्यात्मक बनाया गया है। उपन्यास में कबीर का परिचय विश्लेषणात्मक ढंग से किया है। कबीर के माता-पिता का परिचय आत्मकथात्मक शैली में दर्शाया हैं। काव्यात्मक भाषा-शैली तो प्रस्तुत उपन्यास की आत्मा हैं। भाषा और शैली में सरसता लाने हेतु कबीर के पदों का प्रयोग किया है। इस प्रकार 'लोई का ताना' भाषा और शैली की विविधता के कारण प्रभावी उपन्यास बन पाया है।[24](डॉ. अनिल कुमार; रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास)

3.6 उद्देश्य

प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य लोगों को सही मार्ग की दिशा में ले जाना है। कबीर का विद्रोही और मानवतावादी संदेश व्यक्त करने के लिए लेखक ने अपने उपन्यास में उनके विचारों को प्रस्तुत किया है। कबीर के विचारों में धर्म और सामाजिक अंतर को हराकर, वे मानवता के मूल्यों को उजागर करते हैं। उन्होंने विभिन्न धर्मों के बीच भेदभाव को नकारा और सभी मानवों को एक समान दृष्टि से देखने की बात की। लेखक ने उपन्यास में कबीर और उनके विचारों को लोई के

विचारों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है, जिससे समाज को कबीर के दृष्टिकोण से परिचित किया गया है। इससे सामाजिक जागरूकता और मानवतावाद को बढ़ावा मिलता है। कबीर और उनके परिवार का कर्म में लगाव और कर्तव्य का पालन करते हुए, उन्होंने ईश्वर प्राप्ति, मानवतावाद और क्रांति के विचारों को बढ़ावा दिया। उनके विचारों का विस्तारित उद्देश्य उनके उपन्यास के माध्यम से दर्शाया गया है। लेखक ने अपने उपन्यास में कबीर के विचारों को प्रस्तुत करने के लिए खास ध्यान दिया है।

संदर्भ सूची

1. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 01
2. वही; पृ. 09
3. वही; पृ. 53
4. कुलश्रेष्ठ, स्वामी आनंद. “कबीर के दोहे”, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण: 2017
5. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 50
6. वही; पृ. 55
7. कुलश्रेष्ठ, स्वामी आनंद. “कबीर के दोहे”, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण: 2017; पृ. 36
8. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 55
9. वही पृ. 55
10. वही पृ. 34
11. कुलश्रेष्ठ स्वामी आनंद, “कबीर के दोहे”, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण: 2017, पृ. 84

12. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्कर:1954
13. कुलश्रेष्ठ स्वामी आनंद, “कबीर के दोहे”, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण: 2017, पृ. 29
14. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 42
15. वही, पृ. 138
16. वही, पृ. 139
17. डॉ. अनिल कुमार(आनंद), “रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास”, पात्र एवं चरित्र-सृष्टि, शब्द-सेतु प्रकाशक, प्रथम संस्करण: 2017; पृ. 117
18. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण : 1954, पृ. 89
19. वही, पृ. 72
20. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954
21. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954
22. वही; पृ. 129

23. कुमार, डॉ. अनिल(आनंद) “रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास, पात्र एवां चाररत्र-सृष्टि”, शब्द-सेतु प्रकाशक, प्रथम सांस्करण: 2017, पृ. 115

24. कुमार, डॉ. अनिल(आनंद) “रांगेय राघव के जीवनीपरक उपन्यास, पात्र एवां चाररत्र-सृष्टि”, शब्द-सेतु प्रकाशक, प्रथम सांस्करण: 2017, पृ. 116

अध्याय 4 : 'लोई' का चित्रण

डॉ. रांगेय राघव ने 'लोई का ताना' उपन्यास में स्त्री पात्रों में लोई को प्रमुख स्थान दिया है। कबीर की पत्नी का नाम लोई था। उपन्यास में लोई का चरित्र प्रमुख रहा है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक 'लोई का ताना' रखा है। ताना शब्द का अर्थ होता है; कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के बल होता है। वह तार या सूत जिससे जुलाहे कपड़े की लंबाई के अनुसार फैलाते हैं। उसने लोई को महत्वपूर्ण स्थान दिया है, जिससे पाठकों को उसकी विशेषता और गुणों का पता चलता है। कबीर और लोई के विचारों को एक प्रगतिवादी स्वर के रूप में उभारने का सफल प्रयास लेखक ने इस कृति में किया है।

4.1 लोई का जीवन

लोई के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, लेकिन उनके चरित्र और व्यक्तित्व की झलक हमें विभिन्न साहित्यिक रचनाओं, जैसे कि 'लोई चलै कबीरा साथ' और 'लोई का ताना' में मिलती है। लोई सामाजिक रीति-रिवाजों और भेदभाव का विरोध करती थीं। उन्होंने कबीर को उनके विचारों और कार्यों में हमेशा प्रोत्साहित और समर्थन दिया। लोई आज भी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। लोई एक महान

महिला थीं जिन्होंने कबीर के जीवन और समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह एक प्रगतिशील स्त्री रही है। प्रताप सोमवंशी ने बताया कि "संत कबीर दास को तो दुनिया जानती हैं और उनके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा भी जा रहा है, लेकिन कबीरदासजी कि पत्नी लोई के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है और उनके बारे में ज्यादा नहीं लिखा है। कबीर को पूरा देश जानता है। ना जाने कितनी ही पीढ़ियां कबीर को गाते, उनके पदों को दोहराते बीत गई। कबीर को हम उनके पदों के माध्यम से जानते हैं, उनके निजी जीवन से जुड़ी बातें केवल बातें ही हैं, कोई प्रमाण नहीं। लेकिन कबीर को कबीर बनाने, उन्हें गढ़ने में जिसकी अथक मेहनत रही है, भूमिका रही है, उनकी पत्नी लोई के बारे में लोगों बहुत कम जानते है। लोई, कबीर की पत्नी थीं, शायद ही इससे ज्यादा जानकारी कुछ लोगों को है। लोई जिसके बारे में हमारे इतिहास में कोई पुख्ता और ज्यादा जानकारी नहीं हैं। क्योंकि कुछ लोग लोई को कबीर की शिष्या बताते हैं।"[1] कबीर वचनावली में लिखा है कि, "कबीरपंथ के विद्वान कहते हैं कि लोई नाम की स्त्री उनके साथ आजन्म रही, परन्तु उससे उन्होंने विवाह नहीं किया।"[2] लेकिन कबीर ने विवाह किया था, जैसा कि इस दोहे से प्रमाणित होता है;

"नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार।

जब जाना तब परिहरी, नारी बड़ी विकार॥"[3]

अर्थात; जब हमने ज्ञान प्राप्त नहीं किया था, तब हमने भी माया रूपी कामिनी से सम्बन्ध किया था, लेकिन जब ज्ञान प्राप्त हो गया, तब माया नारी को भारी विकारयुक्त जानकर त्याग दिया। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का लोई के संदर्भ में कथन; "भ्रमण करते हुए एक दिन कबीर साहब भगवती भागीरथी कूलस्थित एक बनखंडी वैरागी के स्थान पर पहुँचे। वहाँ एकविंशति वर्षीया युवती ने आपका स्वागत किया। वह निर्जन स्थान था। परन्तु कुछ काल ही में वहाँ कुछ साधु और आये। युवती ने साधुओं को अतिथि समझा, उनका शिष्टाचार करना चाहा, अतएव वह एक पात्र में दूध लायी। साधुओं ने उस दूध को सात पनघाड़ों में बाँटा। पाँच उन लोगों ने स्वयं लिया, एक कबीर साहब को और एक युवती को दिया। कबीर साहब ने अपना भाग लेकर पृथ्वी पर रख दिया, इसलिए युवती ने कुछ संकोच के साथ पूछा आपने अपना दूध धरती पर क्यों रख दिया? आप भी और साधुओं की भाँति उसे कृपा करके अंगीकार कीजिए। कबीर साहब ने कहा-देखो, गंगा पार से एक साधु और आ रहा है। मैंने उसी के लिए इस दूध को रख छोड़ा है। युवती कबीर साहब की यह सज्जनता देखकर मुग्ध हो गयी उसी समय उनके साथ उनके घर चली आयी। पश्चात् इसी के साथ कबीर साहब का विवाह हुआ। इसका नाम लोई था।"[4] लोई एक सामान्य जुलाहा स्त्री वह अपना

ताना-बाना डालने का कार्य पूरी लगन तथा मेहनत के साथ करती है। कार्य में ही ईश्वर को पहचानने वाली लोई सचमुच कबीर की प्रेरणा बनी रही इसलिए इतिहास द्वारा उपेक्षित लोई को उपन्यास द्वारा लक्षित करने के उद्देश्य से लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास के शीर्षक में लोई को स्थान दिया है। लोई कैसे दिखती थी, क्या करती थी, यह एक चर्चा का विषय बन गया है। लेकिन प्रस्तुत उपन्यास में रांगेय राघव जी ने लोई का वर्णन इस प्रकार किया है, वे कहते है लोई पंद्रह वर्ष की लड़की है जो पतली दुबली है। आँखों का चित्रण इस प्रकार किया है, "लोई के नेत्रों में आनन्द के दीपक जग उठे मानो पुतलियों के अन्धकार में जीवन्त आलोक सुलग उठा, जैसे तूफानी लहरों के बीच किसी दीपस्तम्भ पर में से किरणें हवा को काटती अन्धकार को फोड़े दे रही थीं"।[5] लोई को लिखना-पढ़ना नहीं आता था, लेकिन फिर भी वह कबीर के सभी दोहे स्मरण थे और उन्हें गाती रहती थी, जैसे;

"तेरा साईं तुझ में, ज्यों पहुपन में बास।

कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर-फिर ढूँढे घास॥"[6]

अर्थात; कस्तूरी तो मृग की अपनी नाभि में ही विद्यमान है; किन्तु भ्रमवश वह उसे जंगल की झाड़ियों में तलाश करता रहता है। इसी प्रकार मनुष्य के घट ही में प्रभु की दिव्य ज्योति का दर्शन सहज सुलभ है; किन्तु संसारी प्राणी उससे बेखबर हैं। तेरा सच्चा मालिक तेरे अन्दर इस

प्रकार समाया हुआ है, जिस प्रकार फूलों के अंदर सुगंधि बसी हुई रहती है, परन्तु जिस प्रकार कस्तूरी वाला हिरण उस सुगंधि को बार बार घास में ढूँढता और व्यर्थ परेशान होता है। इसी प्रकार तू भी अपने से बाहर सच्चे रुहानी सुख की खोज केवल भूल भरम के कारण करता फिरता है।[7]

4.2 लोई कबीर का प्रेम

सोलह वर्षीय कबीर से प्रेरित होकर, पंद्रह वर्षीय लोई उनसे प्रेम करने लगती हैं। एक दिन लोई एकांत में कबीर से कहती हैं, "अब मैं तब ही आऊंगी जब कबीर तुम मुझे दिन-दहाड़े हजार जुलाहों के बीच सामने से बाजे बजवाकर लाओगे।"[8] लोई कबीर की समाजसम्मत पत्नी बनना चाहती थीं, और इस प्रकार कबीर और लोई की शादी होती है। लोई पति की अनुगामी रही है। वह अपने कर्तव्य को जानते हुए पति को प्रगति के मार्ग की ओर बढ़ाती है। उपन्यासकार ने पाठकों के सम्मुख लोई को विभिन्न स्थितियों में प्रस्तुत कर अपनी प्रगतिशील भावना को व्यक्त किया है। लोई-कबीर का प्रेम रांगेय राघव जी ने बहुत सुंदर रूप में प्रकट किया है। लोई का प्रेम उनके निम्नलिखित संवादों में दर्शाया है, "मैं और तू दो नहीं हैं। प्रेम तो मैंने तुझसे ही सीखा है। मैं तेरी वेदना को जब समझता हूँ तंत्र ही मुझे लगता है मैं राम के पास पहुंच गया

हूँ। तेरे विरह की शक्ति ही मेरी जड़ता को, मेरे अहंकार को नष्ट करती है। तू होती है तो मैं राम को अपने में पाता हूँ, मुझे फिर तृष्णा नहीं रह जाती, लोई। तू प्यार करना जानती है। इस प्रेम से ही अंडकटाह चल रहा है। यह एक तरह का आलोक है।"[9] "मैं तो भूखी रह लूँगी, पर तुम्हें तो भूखा नहीं देख सकती।"[10] यह गहरी भावनाओं से भरी बातें हैं, जो दो व्यक्तियों के बीच के प्रेम का वर्णन करती हैं। इससे उनका प्रेम और उनकी आत्मीय संबंध की गहराई दिखती है। वह साहसी और उत्साही थी, जिसने अपने जीवन को संघर्ष और समर्पण के साथ निभाया। राघव जी ने कबीर के माध्यम से कहा है कि प्रेम तो कबीर ने लाई से ही सीखा है। इससे जीने का सही मायने समझाता है, जहां प्रेम न केवल एक भावना है, बल्कि एक गुरु या आध्यात्मिक आदर्श के माध्यम से भी सीखा जा सकता है।

4.3 आदर्श पत्नी

लोई कबीर की प्रेरणा स्थान रही है और लोई की प्रेरणा से ही उन्होंने समस्त लौकिक कठिनाइयों का सामना किया। लोई की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी परंतु फिर भी वह परिस्थिति का सामना करती है और अपनी समस्या सुलझाती है। पति के विचारों में सहयोग देकर उसके हर कार्य की प्रेरणा बनी रहने वाली भारतीय स्त्री थी। अपने जीवन

का हर क्षण वह पति के लिए समर्पित कर देती है। पति ने कमाकर लाना और उसने गृहकार्य करना तथा पति को स्नेह देकर प्रसन्न रखने का कार्य करने वाली वह आदर्श गृहिणी है। अपने उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य का उसे ज्ञान है। इसलिए वह अपने पति से कहती है, "तू कमा के गेहूँ, चना जो ला। मैं पीस के रोटी करूंगी तू खा और मुझे खिला। अपने काम तू कर, अपना काम मैं करूंगी मैं ताना डालूंगी तू बाना डाल।"[11] पति की सेवा और पुत्र के लालन-पालन में उसने अपना जीवन व्यतीत किया। अंत में सिकंदर लोदी जब कबीर को मारने के लिए हाथी छोड़ देता है तब कबीर को बचाने के लिये वह खुद उसके सामने जाती है और उसकी वहां मृत्यु हो जाती है। लोई एक सीधी-सादी स्त्री थी। कबीर को अपनी पत्नी लोई से कभी शिकायत नहीं रही और उन्होंने दोहों में लोई को उल्लेख किया है;

"कहै कबीर सुनो रे लोई

राम को भजे सो राम का होई॥"[12]

कबीर की पत्नी लोई का त्याग सचमुच अद्भुत है और उसकी सहनशीलता अपूर्व हैं। स्वभावतः लेखक की अधिक सहानुभूति कबीर की अपेक्षा लोई को मिली है।

4.4 स्त्री निंदा पर लोई के सवाल

लोई ने स्त्री निंदा पर प्रश्न उठाया है, जब कबीर ने कहा,

"नारी की झांई पड़त, अंधा होत भुजंग।

कबिरा तिन की कौन गति, जो नित नारी को संग॥"[13]

अर्थात; नारी की छाया पड़ते ही सांप तक अंधा हो जाता है, तो जो हमेशा नारी के साथ रहता है उसकी कितनी दुर्गति होगी।

"कबीर ने कहा, यही तो मैंने उन नारी से डरे हुओं से कहा था। नारी की छाया से साँप तक अंधा हो जाता है, यानी जो जहरीला होता है! वे जो नारी को विषय की ही वस्तु समझते हैं, उनके लिये क्यों ऐसा नहीं कहा जाये? अगर मैंने सब नारियों के लिये ऐसा कहा घरवाली के साथ घर रहता? कहीं अकेला भटकता नहीं??"[14] इस संदर्भ में डॉ. शरद सिंह का कथन "कबीर वाचिक परम्परा के कवि थे। उन्होंने स्वयं कहा है कि, "मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।" अतः जब विरोधीजन प्रकाशित, प्रमाणित रचनाओं में भी हेरफेर कर देते हैं तो क्या यह संभव नहीं है कि कबीर की स्पष्टवादिता से खीझे हुए विरोधियों ने उन्हें अपने खेमे का दिखाने के लिए कुछ स्त्री-विरोधी दोहे उनके नाम से प्रचारित कर दिए हों। इस पर गंभीरता से शोध होना चाहिए। मेरे विचार से तो शोध के उपरांत ऐसे भ्रामक दोहे कबीर-साहित्य से खारिज किए जाने चाहिए।"[15] लोई ने जब माया पर कहा; "तू कहता है मैं माया हूँ। मुझे

माया ही कह, पर जो माया भगवान ने बनाई है, वह क्या इसी लिये अच्छी नहीं है कि वह बांधे रखती है, उसी भगवान की सौगात है। तू मुझसे क्या क्या कह जाती है। मैं इतना सब सुन कर आता हूँ। वह सब क्षण भर में तेरे सामने लरज सा जाता है। तू माया कहाँ है लोई; तुझे देखता हूँ तो मुझे बंधन नहीं लगता, सहारा सा मिलता है।"[16] प्रताप सोमवंशी के अनुसार, "लोई को इसलिए भी जानना जरूरी है आज के समय में कि अब से साढ़े 600 साल पहले एक स्त्री हुई थी। वो स्त्री उस समय कबीर का जीवन बचाती है, जब कबीर से मिलती है। वो स्त्री कबीर के लिए समाज से टकराती है और वो कबीर से भी टकराती है, जहां-जहां उसको लगता है कि यहां कबीर गलत हैं.. तो एक ऐसी आदर्श स्थिति और एक ऐसी आदर्श स्त्री हमारे सामने आती है।"[17]

4.5 लोई के संदर्भ में विद्वानों के मत

कबीर का विवाह लोई से हुआ था, यद्यपि कबीरपंथियों की मान्यता इससे अलग है। वे यह मानते हैं कि कबीर का विवाह नहीं हुआ था और लोई उनकी शिष्या थी। कबीर के काव्य में कई स्थानों पर लोई शब्द का प्रयोग मिलता है;

"कहत कबीर सुनहु रे लोई।

हरि बिनु राखनहार न कोई॥"[18]

डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र का मत है कि यहाँ 'लोई' कबीर की पत्नी के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है अपितु यह 'लोग' का वाचक है 'लोक' शब्द ही 'लोई' के रूप में परिवर्तित हो गया प्रतीत होता है;

लोक > लोग > लोअ > लोइ > लोई

डॉ. रामकुमार वर्मा ने तो कबीर की दो पत्नियाँ 'धनिया' एवं 'रमजनिया' का उल्लेख किया है। पर वास्तव में, कबीर ने इन शब्दों का प्रयोग प्रतीकों के रूप में किया है, पत्नियों के लिए नही। धन की लालची बुद्धि 'धनिया' है तो राम की भक्तिन बुद्धि 'रमजनिया' है।[19]

इतिहास के अनुसार कबीर तथा लोई की दो संतान थीं, परंतु उपन्यास में केवल पुत्र कमाल का ही वर्णन किया है। लोई अपने पुत्र कमाल को समझाते हुए कबीर की महानता का परिचय देती है। कबीर के पदों को लिखकर संग्रहित करने की सलाह को देकर कबीर वाणी को जीवित रखने का प्रयत्न करती है। इसलिए कमाल आदरपूर्वक कहता है, "वह कितनी करुण थी मेरी माँ, मेरी अम्मा, मेरा वह पेड़ जिसने धूप में जल-जलकर भी मुझ पर छाया कर रखी थी तथा आज मुझे याद आने पर लगता है कि वह तो माता धरती थी।"[20] इस प्रकार लोई का चरित्र स्पष्ट और मार्मिक बन गया है। "किसी पुरुष को महान बनाने के पीछे एक स्त्री कारण रहती है।" इस कथन को पूरी तरह से यहाँ सिद्ध किया गया है। कबीर ने सभी गलत चीजों का विरोध किया इसके लिए उनको

काफ़ी सारी समस्याओं का सामना और लोगों का तिरस्कार भी जलना पड़ा। जब उस समय कबीर को इतना कष्ट झेलना पड़ रहा था तब लोई को कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते और लोग यहां तक भी कहते हैं कि कबीर का जो लिखित साहित्य है उसमें एक बड़ा योगदान लोई का है क्योंकि लोई ने पढ़ना-लिखना सीख लिया था।

संदर्भ सूची

1. प्रताप, सोमवंशी. साक्षात्कार : DNN24 channel https://youtu.be/xE_LC8OqIHI?si=nfQZz6kJSjUsHnoz
2. अयोध्यासिंह, उपाध्याय 'हरिऔध'. “कबीर वचनावली”, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2011, पृ. 19
3. वाषर्णेय, डॉ. लक्ष्मीसागर. “हिन्दी साहित्य का इतिहास”, लोकभारती प्रकाशन, इण्डियन प्रेस प्रा. लि. 36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-211002, संस्करण : 2009, पृ. 123
4. अयोध्यासिंह, उपाध्याय 'हरिऔध'. “कबीर वचनावली”, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2011, पृ. 21
5. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण : 1954, पृ. 62
6. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण : 1954, पृ. 36
7. कुलश्रेष्ठ, स्वामी आनंद. “कबीर के दोहे”, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण : 2017 पृ. 27
8. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण : 1954, पृ. 51
9. वही; पृ. 56

10. वही; पृ. 59

11. वही; पृ. 65

12. वही; पृ. 66

13. वही; पृ. 83

14. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 91

15. Article : डॉ. शरद सिंह https://sharadakshara.blogspot.com/2016/12/blog-post_14.html?m=1

16. राघव, रांगेय. “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण:1954, पृ. 91

17. प्रताप सोमवंशी, साक्षात्कार : DNN24 channel https://youtu.be/xE_LC8OqlHI?si=nfQZz6kJSjUsHnoz

18. मिश्र डॉ. भगवतस्वरूप. “कबीर-ग्रंथावली”. प्रकाशक : विनोदा पुस्तक मंदिर. संस्करण : 1969. पृ. 274

19. डॉ. एस.के. शर्मा, “NEP हिन्दी आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता(Hindi)”,(MJC-2) Rajeev Bansal's S3PD राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020, प्रकाशक: एसबीपीडी प्रकाशन, 2022

20. राघव, रांगेय. “लोई का ताना” विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण 1954, पृ. 105

उपसंहार

कबीर के जीवन के संबंध में विद्वानों के बीच विवाद है। कई विद्वान उनके जन्म के संदर्भ में अलग-अलग मत रखते हैं। कुछ विद्वान उनके जीवन के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों को लेकर भी अलग-अलग धारणा रखते हैं। इसके अलावा, उनके विचारों को भी लेकर अनेक विवाद हैं। उनके विचार आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। यह रचना विधा हमें नई दृष्टि प्रदान करती है और हमारी समझ में गहराई लाती है। उपन्यास के माध्यम से हम न केवल मनोरंजन का आनंद लेते हैं, बल्कि अपने जीवन में नई शिक्षाएं भी प्राप्त करते हैं। इससे हमारी सोचने की क्षमता बढ़ती है और हम अपने आसपास की दुनिया को और भी समझने की कोशिश करते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से हम लोई जैसे पात्र के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं, जो हमें उनके संघर्षों और समृद्ध विचारों को समझने में मदद करता है। लोई का ताना एक महत्वपूर्ण उपन्यास है जो महान कवि कबीर के जीवन को समर्पित है। इस उपन्यास में कबीर के विचारों को सुंदरता से प्रस्तुत किया गया है और लोई की भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से उजागर किया गया है। लेखक ने साहित्यिक दृष्टिकोण से कबीर और लोई के विचारों को एक प्रगतिवादी स्वर में प्रस्तुत किया है, जो हमें विचार करने और समझने

के लिए प्रेरित करता है। प्रस्तुत उपन्यास में, लेखक ने लोई को कबीर के जीवन के महत्वपूर्ण पात्र में प्रमुखता दी है। लोई को एक आदर्श स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पति के साथ सहयोग और प्रेम में आगे बढ़ती है। उपन्यासकार ने लोई के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करके महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाया है। लोई की साहसिकता, समर्थन, और प्रगतिशील भावना ने उन्हें एक महान महिला बनाया जो समाज में अपने पति के साथ एक सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है। इस उपन्यास के माध्यम से, हमें महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, और व्यक्तिगत स्थिति में प्रगतिशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका का विचार करने का अवसर मिलता है। लोई और उसके संघर्ष से यह सिखने को मिलता है कि समर्पण और साहस से हर मुश्किल का सामना किया जा सकता है। लेखक ने उपन्यास के माध्यम से हमें लोई के प्रेम और समर्पण की गहराई को समझाया है, जिससे हमें नई प्रेरणा और समझ प्राप्त होती है। कबीर के जीवन के संदर्भ में हम सिर्फ़ अनुमान लगा सकते हैं। उनके विचारों को समझने के लिए उसकी रचनाओं और साक्षात्कारों का सही संदर्भ लेते हैं। उनका जीवन सागर की तरह है जिसमें अनेक रहस्य छुपा हुआ है। उसके विचारों में प्रेम, सम्वेदना, और सामाजिक न्याय का मूल्य भरा हुआ है। उनका योगदान समाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण है। कबीर दास की शिक्षाएँ व्यापक हैं। और सभी के लिए समान है क्योंकि उन्होंने हिंदू,

मुस्लिम, सिख और अन्य धर्मों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया। इस उपन्यास में कबीर के विचारों, संघर्षों और संदेशों को और भी गहराई और प्रासंगिकता प्रदान किया गया है। इससे हमें उनके दर्शन को समझने और उनके विचारों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है। प्रस्तुत उपन्यास में दार्शनिक और गहरे विचार हैं, जो हमें जीवन के मूल्यों की महत्वता को समझाते हैं। इस उपन्यास में प्रेम, करुणा और सहानुभूति जैसे भावों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उपन्यास के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि हर व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है और समाज के निर्माण में सभी की भागीदारी आवश्यक है। लोई का ताना उपन्यास में दार्शनिक और गहरे विचार है। यह दर्शाता है कि जीवन में प्रेम, करुणा आदि कितना महत्वपूर्ण है। लोई के अलावा कई अन्य पात्रों और तथ्यों का भी उल्लेख है, जिससे कहानी का समापन होता है। यह उपन्यास समाज की विभिन्न पहलुओं और महिला के भूमिका को समझने में मदद करता है। इसके अलावा, इस उपन्यास में कबीर के साथ जुड़ी और भी कई घटनाओं का वर्णन है, जो उनके विचारों, संघर्षों और संदेशों को और भी गहराई और प्रासंगिकता प्रदान करता है। वास्तव में, कबीर के जीवन में कुछ ऐसी महिलाएं रही होंगी जिनका महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा, जैसे कि उनकी पत्नी, माता आदि जो उनके जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से रही होंगी। इन महिलाओं के बारे में जानकारी कम हो सकती है क्योंकि इतिहास के कई अंशों में महिलाओं

के योगदान को अनदेखा किया गया है। इससे उनके बारे में संदर्भ और जानकारी अधिक उपलब्ध नहीं होती। इतिहास को नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, ताकि हम महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को समझ सकें और उन्हें उनकी सच्ची पहचान और सम्मान दे सकें। इससे हम समाज में अधिक समानता और न्याय की दिशा में प्रगति कर सकते हैं। इससे यह भी प्रतीत होता है कि इतिहास में महिलाओं के योगदान को बहुत कम महत्व दिया गया है, और उनके बारे में अधिक जानकारी का अभाव होता है। इतिहास को पुनः लिखते समय, हमें महिलाओं के संदर्भों को और सम्मान के साथ प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इससे हम एक समृद्ध समाज की दिशा में प्रगति कर सकते हैं, जहां हर व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है और समाज में समानता और न्याय है।

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

1. राघव रांगेय, “लोई का ताना”, विनोद पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण : 1954

सहायक ग्रंथ

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. “कबीर” वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 1941
2. रामकुमार, वर्मा. “संत कबीर”, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद 1943
3. डॉ. धर्मवीर. “कबीर : नई सदी में तीन, कबीर वाज भी, कपोत भी, पपीहा भी”; वाणी प्रकाशन।
4. खान, डॉ॰ इशरत. “कबीर विमर्श”, विद्या प्रकाशन, संस्करण : प्रथम, मई - 2006
5. खान, डॉ. एम फिरोज़. “नई सदी में कबीर”, प्रकाशक : आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण : 2007
6. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. “कबीर”, राजकमल प्रकाशन, 2008

7. तिवारी, अजय. “कबीर, दुसरा पाठ : मूल्यांकन माला - 3”, (स्पादक : अच्युतानन्द मित्र), अनन्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2020
8. अग्रवाल, पुरुषोत्तम. “अकथ कहानी प्रेम की”, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, 2021
9. शर्मा, सुभाष शर्मा. “कबीर कविता एवं समाज”, अनुज्ञा प्रकाशन, 2021
10. कुमार, डॉ. अनिल(आनंद). “रांगेय राघव के जीवनीपरख उपन्यास”, पात्र एवं चारित्र-सृष्टि, शब्द-सेतु, प्रकाशक, प्रथम संस्करण: 2017
11. जाधव, डॉ. अलका गडकरी. “रांगेय राघव के उपन्यासों में नारी”, विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2009
12. तिवारी, रामचन्द्र. “हिन्दी का गद्य-साहित्य”, महाराणा प्रताप कालेज, गोरखपुर, प्रथम संस्करण : 1955

शोध प्रबंध(Thesis)

1. अग्रवाल, पुरुषोत्तम. “कबीर की भक्ति का सामाजिक अर्थ”, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067, 1985

2. मिश्र, अरुण प्रकाश. “कबीर और तुलसी के विशेष सन्दर्भ में काव्यभाषा का सामाजिक अध्ययन”, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-11067, जनवरी 1984
3. पाण्डेय, श्रीमती मिथिलेश. “कबीर के काव्य में लोकतत्व”, पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 1994
4. राज, श्रीमती समता. “आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता”, सनातन धर्म महाविद्यालय; मुजफ्फरनगर, 2002
5. सिंह, ज्ञानेन्द्र पाल. “कबीर और रैदास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ”, वीर बहादुर सिंह + विश्वविद्यालय, जौनपुर, नवम्बर : 2002
6. तिवारी, अलका. “कबीर के काव्य में सामाजिक एवं दार्शनिक स्वरूप”, वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2002
7. प्रसाद, कृष्णकान्त. “कबीर के मानववादी विचार एवं उनकी प्रासंगिकता”, उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज, वाराणसी, 2004
8. सिंह, राकेश कुमार. “कबीर साहित्य में सामाजिक चेतना”, वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय जौनपुर, 2005
9. सिंह, ग्रीष्मा. “छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन”, क्षेत्रीय अध्ययन एवं अनुसन्धानशाला रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), 2008

Websites/Articles

1. http://kavitakosh.org, कबीर, Site visited on 14th Jan 2024.
2. https://hi.wikipedia.org संत कबीर, Site visited on 19th Jan 2024.
3. संत कबीर : https://en.wikipedia.org संत कबीर, Site visited on 25th Feb 2024.
4. Article : Pooja. in journal of Advances and scholarly Researches in Allied education / multidisciplinary Academic Research (2)

साक्षात्कार / YouTube

1. CEC Channel
   https://youtu.be/ImbDW9_RK1s?si=djWYHCB_cmRGdE2d
2. e-PG Pathshala Channel
   https://youtu.be/F8alOc4iCZE
3. CEC Channel : कबीर दास की समाज चेतना
   https://youtu.be/Cd_8lz5W_ws?si=rp74_SLrQurjo_nz

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/265

Date: 09/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Akshada Arvind Naik Gaonkar a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 12 Hours & 38 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Manisha Gaude.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIMING	TIME SPENT
1.	10/07/2023	11:11 am to 12:11 pm	1 hour
2.	10/07/2023	3:54 pm to 4:11 pm	17 min
3.	13/07/2023	10:59 am to 12:10 pm	1 hour 11 min
4.	04/01/2024	10.35 am to 12.00 pm	1 hour 25 min
5.	10/01/2024	11.49 am to 12.45 pm	56 min
6.	14/02/2024	2.00 pm to 3.00 pm	1 hour
7.	19/02/2024	1.16 pm to 1.19 pm	3 min
8.	11/03/2024	11.45 am to 3.30 pm	3 hour 45 min
9.	13/03/2024	11.41 am to 1.20 pm	1 hour 39 min
10.	24/04/2024	11.53 am to 1.15 pm	1 hour 22 min
Total hours			**12 Hours 38 Minutes**

Signature of the Guide
(Asst. Prof. Manisha Gaude)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

09/05/24

Signature of the Student
Miss Akshada Arvind Naik Gaonkar